अर्ध शताधिक ग्रंथ कर्ता ,इन्दू)हिन्दू (धर्म प्रदाता,
संचलनात्मक रचयिता ,त्रैत सिद्धान्त आदि कर्ता

श्री श्री श्री आचार्य प्रबोधानन्द योगिश्वर जी

समाधि

Translation by
K.Ramani B.Com

Published by
Indu Gnana Vedika
(Regd.No.168/2004)

IMP Note : To know the true and complete meaning of this Grandha (book) it must be read in Telugu Language.

समाधि

समाधि नामक शब्द बहुत समय से प्रचलित होने के बावजुद, वह शब्द कालगमन में रुपान्तरणीय शब्द है। आज समाधि नाम से उच्चरित हुआ शब्द पूर्व समादि हुआ करता था। पूर्व समादि शब्द अंतत; कालागमन में समाधि में परिवर्तित होने के बावजुद, समादि एवं समाधि दोनों शब्दों का अर्थ अलग-अलग होने के बावजुद , सारी प्रजा के लिए जानकारी का अर्थ एक ही है। जो इस प्रकार है, मनुष्य मृत्यु के पश्चात् मृतदेह को जमीन के अन्दर दफनाए जाने को समाधि कहते हैं। उस भाव का अनुसरण करते हुए कई मतों(धर्मों) में, मृत मनुष्य प्रलयकाल में परमात्मा दोबारा समाधियों से जगायेगे, और तब उनके पाप और पुण्य का परिशीलन कर पाप के योग्य नरक में, पुण्य के योग्य स्वर्ग में भेजा जाएगा, ऐसा कहा जा रहा है। हिन्दुमत(धर्म) में भी स्वर्ग और नरक का होना कहा जा रहा है, मनुष्य मृत्यु के तुरन्त बाद स्वर्ग और नरक में जाता है, इसकी समाप्ति के पश्चात् तुरन्त पुन; पैदा होता है ऐसा कहा जा रहा है। कुल मिलाकर सभी मतों(धर्मों)के लोगों का विश्वास हैं कि स्वर्ग और नरक होते हैं। मृत शरीर को समाधि करना सभी मतों(धर्मों) में हैं। स्वर्ग और नरक केवल मनुष्य का विश्वास है उसे देखनेवाला और कहनेवाला कोई नहीं है। परन्तु समाधि मृत मनुष्य को दफन करने के स्थान को प्रत्यक्ष रुप से सब जानते हैं। स्वर्ग और नरक केवल विश्वास मात्र ही है, किन्तु समाधि प्रत्यक्ष सत्य है।

प्रजा के मनोंभावों में समाधि के प्रति एक पवित्र भावना है। एक महान व्यक्ति के मृतदेह को दहन करना, दहनकर राख को समुद्र में बहा देना, दहन किये स्थान पर उस व्यक्ति की स्मृति में एक समाधि निर्मित करना, यह फलाँ व्यक्ति की समाधि है कहा जाता है। इस्लाममत(धर्म) में एक वर्ग के लोग दैवमार्ग में रहनेवाले महान व्यक्तियों के समाधि को दर्गाओं का नाम रखकर आदर से आराधना करते हैं। वैसे ही हिन्दुमत(धर्म) में भी कुछ समाधियों की आदर भाव से पूजा किया जाता हैं। कुछ लोग

तो अपने परिवार के व्यक्तियों की समाधियों को साल में एक बार पूजा करते हैं। इस प्रकार कह सकते हैं कि मनुष्यों में समाधि के प्रति पवित्र भावना बनी हुई है। कई स्थानों में समाधि मनुष्यों के लिए पुण्यक्षेत्र, पूजा-स्थल बन गया है। समाधियाँ मनुष्यों के लिए पवित्र भावना का विषय है दृष्टि में रखकर, कई राजाओं ने अपने मृत्यु से पहले ही अपने मृतदेह की समाधि बनवा रखा, ऐसी ही समाधियाँ बिना किसी पहचान के कई हैं। कुछ एक की पहचान हुई। सब जानते हैं ताजमहल ख्याति प्राप्त समाधि है। इस प्रकार से प्रजा के मनोंभावों पर पूर्ण छाप छोड़नेवाली समाधि के बारें में विस्तार से जानेंगें।

समाधि का अर्थ है सब पर समान रुप से लागू हो। यह अर्थ नया अहसूस हो सकता है लेकिन यही वास्तविक अर्थ है। कई लोगों ने समाधि का अर्थ कुछ इस प्रकार से कहा है। धि अर्थात् बुद्धि, सम+धि =समाधि, बुद्धि के तुल्य कहा गया। कहने के लिए यह सही है। परन्तु यह अर्थ किस विषय पर लागू होगा, बुद्धि के तुल्य है या नहीं, जब वह जिन्दा था? या मर जाने के बाद? ऐसे प्रश्न उठ सकते हैं। मृत व्यक्ति की बुद्धि कहीं नहीं होती है। जीवित व्यक्ति को समाधि से कोई मतलब नहीं, क्योंकि वह उसे पाता नहीं है। जबकि समाधि मृत व्यक्ति के लिए ही आवश्यक होती है, इसलिए उसके बुद्धि के बारें में कहने की आवश्यकता नहीं है। क्योंकि मृत व्यक्ति की बुद्धि होती नहीं है। यदि इस प्रकार से योचना की जाय तो बुद्धि कहना गलत सिद्ध होता है। कोई कुछ भी अर्थ निकालें यह आध्यात्मिकविद्या के लिए पर्याप्त नहीं है। इसलिए सब पर समता रुप से लागू होनेवाला या समानता से लागू होनेवाला अर्थ अध्यात्मिकता के लिए तथा प्रत्यक्ष अनुभव के लिए पर्याप्त है। आज समाधि कहलानेवाला शब्द पूर्व सम+आदि, समादि हुआ करता था। आदि अर्थात् प्रथम या सृष्टि के आरम्भ में। सम अर्थात् सबकी जानकारी का अर्थ ही, समाधि अर्थात् सृष्टि से सब पर समता से होना या लागू होना।

यहाँ मुख्य बात यह है कि सृष्टि के आदि से ही कहने में तथा सृष्टि आरम्भ होने के पश्चात् सब के लिए समाधि था सूचित होता है। आदि से ही समान रुप से था, इसलिए यह समाधि पहले से ही आरम्भ हुआ सूचित हो रहा है। जीव के लिए पुर्नजन्म में ही समाधि होता है। मनुष्य के लिए मृत्यु के पश्चात् की गयी व्यवस्था समाधि नहीं कहलाएगी। क्योंकि मनुष्य के मृत्यु के पश्चात् समाधि बनना सब पर समान रुप से लागू नहीं होता है। इन बातों को सुनकर आपको नया महसूस हो सकता है। कुछ लोग तो हमारी बातों पर जरा भी यकीन नहीं करेंगें। और कुछ अन्वेषक शोधन बुद्धि से योचना कर सकते हैं। इस प्रकार से योचना करनेवालों को बेशक सत्य ज्ञात होगा। एक मनुष्य मरने के पश्चात् उनका शरीर जमीन के अन्दर दफनाया जाता है। तो उसे अर्थ के अनुसार समाधि, या समादि बिलकुल नहीं कह सकते हैं। इसका अर्थ गड्ढ़े में दफनाना, या कब्र, इन दोनों पर लागू नहीं हो सकता है।

सभी मतों(धर्मों) में समाधि शब्द होने के बावजुद, सभी प्रवक्ताओं ने पवित्र भावना से कहने के बावजुद, इसे किसी भी मत(धर्म) के लोगों ने ठीक से समझा नहीं, कह सकते हैं। लोग हम से प्रश्न पुछ सकते हैं जो हम लोगों को समझ में न आ सका, और सारे ज्ञानपंड़ितों को भी समझ में न आ सका, वह केवल तुम्हें ही कैसे समझ में आया। इसका हमारा जवाब है, कौन सा ज्ञान सच्चा है ? किसका ज्ञान सच्चा है ? इस प्रश्न के जवाब में, जहाँ प्रश्न शेष रह जाए और जवाब न मिले वह ज्ञान सच्चा ज्ञान नहीं है। जहाँ प्रश्न शेष न रहे और सर्वत्र जवाब हो, और जहाँ खंडन करने के लिए प्रश्न शेष न हो सिर्फ ज्ञान ही ज्ञान हो, वह ही सच्चा परमात्मा ज्ञान है कह सकते हैं। मेरे बताए समाधि के विषय में हो, या प्रवक्ताओं के बताये समाधि विवरण हो, कहीं भी प्रश्न शेष न रहेगा। इसलिए यहाँ हमारे बताये ज्ञान ही सच्चा दैवज्ञान है, यही सच्चा धर्म है सूचित कर रहे हैं। अन्य के बताये समाधि के विषय में, आखिर में प्रश्न

शेष रह कर निरुत्तर हो जाते हैं। इसलिए सूत्र के अनुसार वह सच्चा दैवज्ञान नहीं है कह सकते हैं। सभी मतों(धर्मों) के ग्रंथों में भी हमारे बताये विषय ही सौ प्रतिशत सारे प्रवक्ताओं ने कहा।

हलांकि मनुष्य को एक ही गलतफहमी हो गयी, मनुष्य माया के वश में पड़कर परमात्मा के बताए ज्ञान को गलत समझ बैठा। यही गलती मनुष्य ने की। इस गलतफहमी से ही परमात्मा धर्म मनुष्य के मध्य में अधर्म के रुप में परिवर्तित होकर प्रचार हो गया। जैसे कि पूरा गाँव उत्तर बताए लेकिन एक व्यक्ति दक्षिण बताता है, सारे मनुष्य जाति मरण होने को समाधि कहते हैं, किन्तु हम, यह सत्य नहीं है, मनुष्य जब जन्म लेता है उसे समाधि कहते हैं। जो बातें किसी ने नहीं बतायी उसे परमात्मा ने कहा, प्रवक्ताओं ने कहा कहकर, तुम अकेले ही विरुद्ध में बातें क्यों कर रहे हो ? ऐसा कोई भी मुझसे पुछ सकता है। इसका हम जवाब धैर्यपूर्वक दे रहे हैं। जो सत्य है उसे ही हम कह रहे हैं। सारी दुनिया असत्य को सत्य कहें किन्तु वह सत्य न होगा। इससे मैं भी सहमत नहीं हूँ। और हम भी आप से पुछ रहे है किपरमात्मा के बताये प्रत्यक्ष सत्य को न ग्रहण कर, असत्य विषय को आप कैसे समर्थन दे रहे हैं।किन्तु हमारी बातों में अनेक लोगों को अड़ियल तर्क नजर आ सकती है। अच्छी तरह से योचना करनेवालों को हमारी बातों में सत्यता नजर आयेगी। अबतक सब लोगों को समाधि शब्द सामान्य नजर आया होगा, अब हमारे बताये भाव में समाधि शब्द कोई सामान्य शब्द नहीं है, यह पवित्र अर्थ देता हुआ शब्द है, और यह शब्द धर्माधर्म के विषयों से बँधा हुआ शब्द है समझ में आ सकता है। सारे मनुष्य गलत फहमी के शिकार समाधि(समादि) आखिर है क्या ? प्रत्यक्ष प्रमाणों द्वारा विवरण कर देखेंगें।

गर्भ के विषय में हम सब ने सुना हैं। माता का गर्भ, तथा भूगर्भ के बारें में भी हम सब ने सुना हैं। गर्भ शब्द का अर्थ बिना दिखलाई दिये

ढ़ंककर रखा हुआ। माता का गर्भ अर्थात् शिशु शरीर को ढ़ंक कर रखनेवाला। वैसे ही भूगर्भ अर्थात् मृत शरीर को बाहर दिखलाई दिये बिना ढ़ंका रखने वाला। इससे सूचित होता है कि गर्भ दो प्रकार के हैं पहला पैदा होनेवाला नये शरीर को छुपा कर रखनेवाला, दूसरा मृत शरीर को छुपाकर रखनेवाला। सब भूगर्भ को समाधि कहते हैं। भूगर्भ को समाधि कहना बहुत बड़ी भूल होगी। क्योंकि भूगर्भ के अन्दर शरीर की मृत्यु हो गई। और उस शरीर में न जीव है न आत्मा है। जीव तथा आत्मा शरीर के अन्दर रहने से ही जीव पर समानता से लागू होगा, कह सकते हैं। जब जीव ही न रहे, जड़ शरीर पर समानता से लागू होगी कहने की गुंजाइश ही नहीं बचेगी। वैसे ही माता के गर्भ में शिशुशरीर के अन्दर भी जीव तथा आत्मा दोनों नहीं रहते हैं। इसलिए माता के गर्भ को भी समाधि कहने की गुंजाइश ही नहीं है। माता का गर्भ हो, या भूगर्भ हो, एक पैदा होनेवाला शिशुशरीर, तथा दूसरा मृत शरीर को छुपाना समाधियाँ नहीं होती हैं। **गर्भ का अर्थ है मर्म से रखना या रहस्य से छुपाना।**

भूगर्भ हो, या माता का गर्भ हो समाधि(समादि) नाम जब लागू हो,ब्रम्हविद्याशास्त्र के अनुसार अध्यात्मिकविद्या का अनुसरण करते हुए समादि कहाँ होती है? किसे समाधि कहेंगें? ऐसे प्रश्न आ सकते हैं। इसका उत्तर इस प्रकार से है, एक मनुष्य को प्रकृति के भाग में, तथा आत्मा के भाग में दो भागों में विभाजित कर देख सकते हैं। प्रकृति भाग में पूरा शरीर होता है। आत्मा भाग में जीवात्मा, आत्मा रहते हैं। इतना ही नहीं परमात्मा भी रहता है। परन्तु परमात्मा शरीर के बाहर, शरीर के अन्दर रहने की वजह से आत्मा के भागों मे जीवात्मा, आत्मा को ही परिगणना में लिया गया। बिना जीवात्मा, आत्मा के 24 भागों के शरीर को एक भाग के रुप में, जीवात्मा तथा आत्मा को मात्र ही एक भाग के रुप में पहचानें या गिनें तो प्राकृतिक भाग शरीर की समादि नहीं होती है, सूचित होगा। जगत में जब धर्म पर ग्लानि आकर अधर्म प्रचार में आ गया समादि नाम

का धर्म अधर्म में बदलकर, वास्तविक समादि से अनभिज्ञ रहकर, असत्य समादि भिज्ञ हो गया है। इस वजह से लोग भूगर्भ को ही समादि सोचते हैं। कोई नहीं जान सका कि भूगर्भ को समाधि सोचना भी अधर्म ही होता है।

प्राकृतिक भाग शरीर के अलावा जीवात्मा, तथा आत्मा मात्र ही समादि होती है, आत्मा भाग जीवात्मा, तथा आत्मा की समादि ही असली समादि है, यही दैवधर्म है, समझना चाहिए। जीव का जन्म(पुर्नजन्म) शुरु से ही होने की वजह से "आदि" कहा गया, और सारे जीवों पर भी एक ही प्रकार से लागू होता है इसलिए "सम" कहा गया। इसे ही पूर्णत; समादि कहा गया। हमारा बताना सभी के लिए नया मार्ग के रुप में नजर आ सकता है, इसे अबतक का बहुत ही पुराना धर्म समझना चाहिए। सारे प्रवक्ताओं ने इस धर्म को सूचित किया, लेकिन लोग इसे समझ न सकें। प्रवक्ताओं द्वारा बताया गया समादि धर्म को अगर विशद रुप से जान सकें कि, मनुष्य के मरण समय में जीवात्मा तथा आत्मा शरीर को छोड़कर बाहर चले जाते हैं। इस प्रकार मरण में जीवात्मा, आत्मा दोनों का छोड़ा हुआ शरीर को भूगर्भ में(धरती में) दफनाने से समादि नहीं होता है। सम +आदि = समादि शब्द का अर्थ भुगर्भ पर लागू नहीं होता है। वैसे ही माता के गर्भ के अन्दर जीवात्मा, आत्मा के बिना शिशुशरीर के लिए भी समादि शब्द लागू नहीं होता है। जीवात्मा, आत्मा जब निक्षिप्त हो जाते हैं उसे समाधि या समादि कहा जाता है। जीव जन्म के समय को "आदि" कहा जाता है। जीव जब शरीर धारण करता है उसे जन्म या पुर्नजन्म कहते हैं। सर्व प्रथम शरीर धारण करने समय को "आदि" कहा जाता है, और सारे जीवों पर समानता से लागू होता है इसलिए इसे समादि कहा गया। एक जीव शरीर में प्रवेश कर, उस शरीर में निक्षिप्त(छुपाया गया) होकर किसी की नजर में न आकर रहने को वास्तव में समादि कहते हैं।

आत्मा, जीवात्माएँ दोनों जोड़ी आत्माएँ हैं, एक को छोड़कर एक ही रहने की गुंजाइश नहीं है। जब जीव जन्मों को न लेकर मोक्ष की प्राप्ती करता है आत्मा और जीवात्मा दोनों आपस में मिल जाते हैं। तबतक अनेक युग गुजर जायें, अनेकों कल्प समाप्त हो जाए लेकिन जीवात्मा आत्माएँ अलग नहीं होगीं। जब शरीर मरण प्राप्त करता है जीवात्माएँ, आत्माएँ शरीर को छोड़ कर कर्म के अनुसार निर्णीत दूसरे शरीर को धारण करते हैं। दूसरे शरीर धारण करने को जन्म या पुर्नजन्म कहते हैं। सब जानते हैं शरीर छोड़कर जाने को मरण, तथा नये शरीर धारण करने को जनन कहते हैं फिर भी मरण में क्या होता होगा, जनन में क्या होता होगा वास्तव में कोई नहीं जानता है। जनन-मरण ब्रम्हविद्या शास्त्र के सिद्धान्त हैं इसके बावजुद इनसे सब अनजान रह गए हैं इसलिए रहस्य बनकर रह गया। हमने गत में इसके विवरण सब की समझ में आ सकें **जनन मरण का सिद्धान्त**, **मरण का रहस्य**, **पुर्नजन्म का रहस्य** नामक ग्रंथों में लिखा था। अब समादि नाम से एक छोटा सा ग्रंथ लिखा जा रहा है।

मरण से जीव शरीर को छोड़कर पुर्नजन्म प्राप्त करता है। पुराने शरीर को छोड़ते क्षण ही बिना विलंब किये आत्मा सहित जीवात्मा नये शरीर के अन्दर प्रवेश करता है। सब जानते हैं पुराना शरीर अर्थात् मृत शरीर। किन्तु नये शरीर के विषय में ही मनुष्य गलतफहमी का शिकार हो रहा है। जीव का धारण किया गया शिशु शरीर ही नया शरीर है जानने के बावजुद, उसे जीव कब धारण करेगा ठीक से जान न सकें। किस दशा में नया शरीर होगा? जीव कब उसके अन्दर प्रवेश करेगा? कैसे प्रवेश करेगा? ऐसे विषयों के बारें में किसी को मालूम न हो सका। किसी को मालूम हो या न मालूम हो, माता के गर्भ में पूर्णत; बना शिशुशरीर प्रसव होकर पश्चात् जीव के प्रवेश योग्य होता है। इसलिए माता के गर्भ से पैदा हुआ शिशुशरीर नया शरीर होता है। प्रसव होकर बिना जीव के रिक्त

शिशुशरीर के अन्दर जीवात्मा आत्मा प्रवेश करते हैं। इस प्रकार से जीव शिशुशरीर के अन्दर प्रवेश करने को पुर्नजन्म कहते हैं। पुर्नजन्म का विषय मनुष्यों को समझ में न आ सका। पुर्नजन्म में प्रसवित हुआ शिशुशरीर ही नया शरीर होता है किसी को जानकारी न हो सकी। माता के गर्भ में ही असम्पूर्ण शिशुशरीर के अन्दर जीव का प्रवेश होना सब जानते हैं, विज्ञान के ज्ञाता भी मानते हैं। मुख्य रुप से यहीं पर सब गलतफहमी के शिकार हैं। विज्ञान को जाननेवाले विज्ञान की सच्चाई की बिना जानकारी किये, विज्ञान बताते हुए अंध-विश्वास में फँस गयें। विज्ञान के अनुसार गर्भ के अन्दर ही शिशुशरीर के अन्दर अब तक किसी भी जीव ने प्रवेश नहीं किया। और जीव प्रवेश होने को किसी ने निरुपण भी नहीं किया।इस बात को सुनकर कई गैनाकॉल्जिट ने हँस कर टाल दिया। उनका विश्वास है कि वीर्यकण में प्राण होता है। इसलिए उन्होंनें हँस दिया। साइन्स के अनुसार परिशोध करना अब भी शेष है, वें नहीं जानते हैं अबतक जो वें जानते हैं वह सत्य नहीं है।

इसी प्रकार से भौतिक शास्त्रवेत्ताओं को भी पुर्नजन्म के विषय में जीव नये शरीर में कब प्रवेश करता है, कौन सा नया शरीर है मालूम न हो सका। जब पुर्नजन्म का विषय ही मालूम न पड़ें, उससे अनुबंधित समादि भी मालूम न पड़ सका। जन्म के बाद ही समादि रहेगी। जन्म से अनुसरण करते हुए समादि होगी। इसलिए जबतक जन्म का विवरण ही न मालूम हो, समादि के बारें में जानना मुमकिन न होगा। अबतक धरती पर जन्म का विषय रहस्य बनकर अनजान विषय हो गया है जन्म से समबद्ध समादि के बारें में कैसे ज्ञात हो सकेगा? जन्म(पुर्नजन्म) का विषय ज्ञात न होने से समादि भी ज्ञात न होगा। इसलिए धरती पर समादि का अर्थ हो, या समादि की असली स्थिीति हो, किसी को जानकारी न हो सकी। माता के गर्भ में शिशुशरीर में प्राण नहीं होता है, जीव उसमें प्रवेश करना नामुमकीन है, वह असम्पूर्ण शरीर है, सम्पूर्ण नया शरीर नहीं है, प्रसवित शरीर को

नया शरीर कहना, प्रसवित शरीर के अन्दर जीव का प्रवेश होता है 1980 वाँ वर्ष में हमने जनन-मरण का सिद्धान्त नामक ग्रंथ की रचना की। उसे लिखे 30 वर्ष हुए उससे दस वर्ष पूर्व ही इस विषय में बताया गया था। अब से चालीस वर्ष पूर्व ही हमने कहा था गर्भस्थ शिशु में प्राण नहीं होता है। हमारे बताये विषय पर किसी को विश्वास नहीं होगा, लोगों में अंधत्व इस प्रकार से रच बस गया हैं यह जानने के बावजुद भी, हमने सत्य कहने के उद्देश्य से इसे शास्त्रबद्धता से बताया हैं । अपने को भौतिक शास्त्रवेत्ता समझनेवाले भी अशास्त्रीय पद्धति से गर्भ में जीव का होना कहते हैं। हमारी बातें साबित हो सकती है, परन्तु गर्भ में शिशु में प्राण का होना साबित न होगा। कई लोगों का कहना हैं कि गर्भ में ही शिशु संगीत सुनता है, गर्भ में ही शिशु बाह्य बातों को ग्रहण करता है, यह सौ प्रतिशत असत्य है। हम वास्तविकता जानते हैं इसलिए धैर्य से उन लोगों के बातों को असत्य कह रहे हैं।

हमारा बताया हुआ यथार्थ क्या है 40 वर्ष पूर्व से ही बता रहे हैं। और 30 वर्ष पूर्व ग्रंथ के रुप में लिखा गया। हमारे बताने के अनुसार, जीव पुर्नजन्म में शरीर को धारण करते ही समादि व्यवस्थित हो जाती है। कैसे होती है? ऐसा है कि जीव प्रसवित नये शरीर में प्रवेश कर जीव शरीर के अन्दर रहता है। इस प्रकार से जन्म के आरम्भ में ही जीव शरीर के अन्दर निक्षिप्त होकर रहने को समाधि कहते हैं। इस प्रकार से समादि में रह रहा जीव और उसके साथ रह रहा आत्मा स्वयं बाह्य प्रपंच से सम्बन्ध स्थापित करता है। उस समय में शरीर के अन्दर में बुद्धि, और मन बाह्य विषयों को ग्रहण करने की स्थीति में नहीं होते हैं। जीव शरीर को धारण करते ही सबसे पहले मन के कार्य को, या बुद्धि के कार्य को आत्मा स्वयं करती है। बिना बाह्य संबंध रखे शरीर में ही दफन हुआ जीव की स्थीति को समादि कह सकते हैं। वह स्थीति शिशु के रुप में जन्में हर प्राणियों की होती हैं। इसलिए यह सबके लिए समान है, अतएव सारे

प्रवक्ताओं ने इसे समादि कहा। समादि में प्रपंच के विषयों से बिलकुल अनजान आदिकाल में आत्मा स्वयं ही समादि से प्रपंच से सम्बन्ध रखती है। इसलिए अंत्य दिन में समादि से इसी शरीर के साथ जगाती है कहा गया। अंत्यकाल या प्रलय का दिन का अर्थ शरीर नष्ट होकर मरण होना। शरीर नष्ट होकर पूर्ण मरण को प्राप्त करने क्षण ही, नये शरीर के अन्दर से जीव को बाह्य प्रपंच के लिए जगाया जाता है। इस प्रकार से पुर्नजन्म प्राप्त दिन सबके साथ होता है। सबके साथ समान रुप से होनेवाला दिन, समादि(शरीर के अन्दर) से जगाया जानेवाला दिन में किसी के शरीर पर वस्त्र नहीं थें। स्मरण रहें बिना वस्त्र के शरीर प्रसवित होता है। इस प्रकार से शरीर समादि से परमात्मा, आत्मा द्वारा जगाने वाले दिन में मनुष्य में(जीव में) कोई गुण नहीं रहता है। न ही कोई गुण कार्य करता है। जीव को बाह्य प्रपंच में शरीर के साथ जगानेवाले दिन, कोई गुण न होने की वजह से शरीर पर वस्त्र न होना से लज्जा भी नहीं रहती है। उस दिन अंत;करणें अर्थात् मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार कोई कार्य नहीं करते हैं। और गुण भी कार्य नहीं करते हैं क्योंकि वें कार्य न करने की स्थिीति में होते हैं। यह विषय सब प्रत्यक्ष प्रमाणों से जानते हैं। माता के गर्भ से पैदा हुआ शिशुशरीर ही समादि है, उस शरीर से सर्वप्रथम प्रपंच ध्यान में आते हैं, प्रलय दिन में समादि से हर किसी को जगाया जाता है, अन्य मतों(धर्मों)में भी परमात्मा के बताये वचन सत्य हैं ज्ञात रहना चाहिए। यह बिलकुल सत्य है! प्रत्यक्ष सत्य ! इतना ही नहीं प्रवक्ताओं द्वारा बताया गया हर बात निश्चित ही पूरा होगा। प्रत्यक्ष घटनाओं को होते हुए देखकर भी नजर अंदाज करना और भविष्य में होगा सोचना, लोगों को गलतफहमी हो रही है।

जनन और मरण सृष्टि के आदि से ही चली आ रही है इसके बावजुद, तब से ही हिन्दूमत(धर्म) में प्राचीनकाल के महान ऋषि मुनि हो, या आज के महान ख्यातिप्राप्त स्वामीजीयों के रुप में नाम प्राप्त व्यक्तियों

हो, वें जनन के विषय को सही तरीके से समझ न सकें, गर्भ में ही पाँचवाँ माह में शिशु में प्राण रहना, गर्भ में ही सब याद रहना, बाहय विषयों को सुन पाना, प्रह्लाद ने महाऋषि नारद के बताए नारायण महामंत्र को सुन पाना, अर्जुन जब अपनी पत्नी सुभद्रा से बातें कर रहा था, गर्भ के अन्दर अभिमन्यु ने युद्धतंत्र के बारें में सुना था कहना सब जानते ही हैं। इस प्रकार से पहले ही लोगों में जनन-मरणों के बारें में धर्म, अधर्म के रुप में प्रचार हो गया। धर्म जो अधर्म बन गया उसे पुन; धर्म के रुप में प्रचार होने के लिए बहुत ही कठिन काम होगा। अधर्म लोगों को बड़ी ही आसानी से समझ में आ जायेगा। जब उसे धर्म के रुप में बताया जाय तो सुननेवालों के अन्दर माया अनावश्यक प्रश्नों, तथा संशयों को उत्पन्न करती है। कहा हुआ विषय सत्य होने पर भी, वह असत्य के रुप में नजर आता है। जनन विषय के बारें में प्रसवित हुआ शिशुशरीर के अन्दर जीव का प्रवेश होता है कहना सत्य, धर्म, और प्रत्यक्ष प्रमाण हैं, और हर तरह से शास्त्रबद्ध भी है, परन्तु मनुष्य का विचार है उस पर विश्वास करना मुमकीन नहीं होगा। इस बारें में मनुष्य जरा भी सोचने की कोशिश करता नहीं है। इसी विषय को अधर्म के रुप में कहा जाय, चाहे इसमें जरा भी सत्य न हो, और प्रत्यक्ष प्रमाण भी न हो, परन्तु मनुष्य बड़ी ही आसानी से यकीन कर लेता है। जैसे कर्ण कान से पैदा हुआ, द्रोण घड़े में पैदा हुआ, बड़ी सुलभता से यकीन कर लेते हैं। कोई नहीं सोचता कि यें धर्म के विरुद्ध बातें हैं। इन विषयो पर किसी भी प्रकार से कोई संदेह होता नहीं है। धर्मयुक्त जन्म के विषय में बताया जाय कि माता के गर्भ से शिशु बाहर निकलने के बाद ही जीव को जन्म की प्राप्ती होती है, और यह सौ प्रतिशत सत्य है, किन्तु मनुष्य विद्वान होते हुए भी विश्वास नहीं कर पा रहा है। अनावश्यक संदेहों के कारण सत्य से दूर होता जा रहा है। पूर्णत; तीक्ष्ण दृष्टि से बिना देखे निर्णय लेकर सत्य को असत्य मान बैठा है। हिन्दूमत(धर्म) में अधर्म के रुप में, तथा अन्य मतों(धर्मों) में माया या

शैतान का ही काम है, प्रवक्ताओं के बताए परमात्मा के धर्म को लोग अधर्म के रुप में समझें तथा परमात्मा के ज्ञान को पूर्णत; न समझ सकें, और अज्ञानी बनकर ही रहें।

हिन्दूमत(धर्म) में ही नहीं बल्कि अन्य मतों(धर्मों) में भी मनुष्यों को परमात्मा की ओर न बढ़ सकें, परमात्मा ज्ञान किसी की समझ में न आ सकें, दिन-रात माया इसी कार्य में रहती है बताने के लिए कई उदाहरण हैं। पवित्र क़ुरआन ग्रंथ में मक्का में अवतरित हुआ "**अ-ब-स**" सूरा 37 आयत (वाक्य) में इस प्रकार से है। "जब वह दिन आएगा हर किसी को केवल अपने ऊपर होश के अलावा किसी पर होश न रहेगा।" इस वाक्य का अनुसरण करते हुए हदीसों में विभिन्न क्रमों द्वारा, प्रमाणों द्वारा उल्लेख किया गया है। उसमें प्रवक्ता महाशयों(स) "प्रलय के दिन सभी लोगों को बिना वस्त्र नग्न जगाया जायेगा।" कहा गया उनकी पत्नियों में शायद चौथी पत्नी हजरत आयशा ने घबराकर "**हे दैव प्रवक्ता ! उस दिन हमारे गोपनीय अंग सबके समक्ष प्रत्यक्ष होंगें ?** पुछा। और तब दैव संदेशको ने (स) इस 37 वाँ आयत को पढ़कर "**उस दिन किसी को दूसरी ओर देखने का होश नहीं रहेगा**" कहा। दैवसंदेश को सूचित करनेवाले मोहम्मद प्रवक्ता जी के कहे गए वाक्यों को विस्तार से देखें तो इस प्रकार से समझ में आ सकता है। प्रलय का दिन अर्थात् प्र का अर्थ पैदा होना। लय का अर्थ नाश होना। प्रलय अर्थात् पैदा होना नाश होने के लिए सूचित होता है। पैदा होना नाश होने के लिए ज्ञात हो जाय तो कौन सा पैदा होना प्रश्न आता है।

इस प्रश्न के दो जवाब हैं। पहला सृष्टि के आदि में सृष्टिकर्ता ईश्वर पंचमहाभूत आकाश, वायु, अग्नि, जल, भूमि इन पाँचों की सृष्टि की। दूसरा, जीव युक्त शरीर को धारण करनेवाले समस्त जीवों की रचना की, पहला अपरिवर्तित प्रकृति दूसरा परिवर्तित प्रकृति कहा जाता है। इसे

चराचर प्रकृति भी कहते हैं। पंच महाभूत अपरिवर्तित, समस्त जीवों को परिवर्तित प्रकृति कहा गया। इस प्रकार दैवसृष्टि दो प्रकार के हैं, पहला जीव रहित प्रकृति को प्रपंच, दूसरा जीवयुक्त शरीर सूचित होता है। जीवयुक्त तथा जीवरहित दोनों प्रकृतियाँ हैं, उनका नाश होना भी (उनका प्रलय भी) दो प्रकार से होते हैं। दो प्रकार के प्रलयों को जानने से पहले दो प्रकार के प्रभवों(पैदा) के विवरण को जान लेना चाहिए।

प्रत्यक्ष विश्व को दो भागों में विभाजित किया जा सकता है। इन्हें चराचर प्रकृति कहा गया। पहला जीवरहित प्रकृति भाग आकाश, वायु, अग्नि, जल, भूमि। दूसरा इन पाँच तत्वों से बना जीवयुक्त शरीर। जीवरहित प्रकृति तथा जीवयुक्त प्रकृति दोनों आदि में ही ईश्वर द्वारा बनें। इन दोनों के सृष्टिकर्ता ईश्वर ही है। जीवरहित प्रकृति की एक ही बार रचना होती है। एक ही बार प्रलय होती है। दूसरी जीवयुक्त प्रकृति का क्रमबद्ध से कर्म का अनुसरण करते हुए अनेकों बार पैदा किया जाता है। तथा अनेकों बार नाश(प्रलय) होता हैं। प्रत्यक्ष विश्व में प्रत्यक्ष जीवयुक्त प्रकृति अनेकों बार नाश(प्रलय) होती है, अनेकों बार रचना की जाती हैं। जीवरहित प्रकृति सृष्टि आदि में एक ही बार सृष्टि होकर, सहस्त्र युगों के अनंतर एक ही बार प्रलय को प्राप्त करती है। जीवयुक्त प्रकृति की नित्य सृष्टि होती रहती है। नित्य नाश(प्रलय) होते रहता है। इससे सूचित होता है सृष्टि दो प्रकार के हैं, तथा प्रलय भी दो प्रकार के हैं, सब के आदिकर्ता ईश्वर एक ही है। अब असल विषय के बारें में बातें करेंगें। दैव संदेशवाहक हजरत मोहम्मद प्रवक्ता(पैगंबर) (स) जी पवित्र क़ुरआन में अ-ब-स में सूचित 80 सुर; में 37 आयत (वाक्य) में "प्रलय के दिन" सभी बताने का कारण सभी मनुष्यों के लिए कहा गया था मालूम पड़ता है। क्योंकि सभी मनुष्य जीवयुक्त प्रकृति के भाग हैं इसलिए अ-ब-स सुर; में 37 आयत के अनुसार यह मनुष्यों से संबंधित प्रलय मात्र ही है सूचित हो रहा है।

परमात्मा द्वारा रचित प्रकृति दो प्रकार के होते हैं, यदि जानकारी न हो तो हजारों युगों के पश्चात् होने वाला विश्वप्रलय को ही प्रलय समझेंगें। मनुष्य इस बात से अनजान रह जाएगा कि उसके जीवन के अंत्यकाल में होनेवाला मरण ही प्रलय होता है। मनुष्य कई दशकों में एक बार होनेवाला मरण भी चर प्रकृति के लिए प्रलय है, इन प्रलयों को मनुष्य अपने जीवन में अनेकों बार प्राप्त करता है, कह सकते हैं। मनुष्य मरने के बाद हर बार समाधि प्राप्त करता है, पुन; समाधि से जगाया जाता है, मक्का में जन्मा अल इनफ़ितारि 82 सूर; में 4वाँ आयत में "जब कब्रें कुरेदी जायेंगें" कुरान ग्रंथ में यह वाक्य लिखा गया है। कब्रें कुरेदना का तात्पर्य है मनुष्य पुन; जीवित हो उठना। इस्लाम पंड़ितों द्वारा लिखें वाक्यों के अनुसार पवित्र क़ुरआन में हजरत मोहम्मद (स) प्रवक्ता के कहे अनुसार प्रलय अर्थात् पूरे विश्व पर संभावित हुआ प्रलय नहीं, बल्कि मनुष्यों को संभावित हुआ जीवन का अंत्यकाल ही मरण है, सूचित होता है। परमात्मा द्वारा सृष्टि हुई चर प्रकृति, अचर प्रकृति दोनों प्रकृतियाँ में केवल चर प्रकृति यानि मनुष्यों के लिए संबंधित प्रलय के बारें में ही अल्लाह ने कहा, मनुष्यों से संबंधित प्रलय को प्राप्त करने के बाद ही मनुष्य समाधि को प्राप्त करता है सूचित हो रहा है।

चर प्रकृति यानि मनुष्यों के मरण से संबंधित प्रलय न मानें तो, विश्व के अंत्य में होने वाला प्रकृति से संबंधित प्रलय समझें तो, उस प्रलय के बाद कब्रें, या उसमें से जगाया जाना नहीं होगा। क्योंकि अचर प्रकृति को संभवित प्रलय विश्वप्रलय होता है। अचर प्रकृति आकाश, वायु, अग्नि, जल और भूमि ही न रहें, सर्वसृष्टि अंत्य हो जाय, ईश्वर के अलावा जब कुछ न रहें जीवों का अस्तित्व, या पुन; उनका जीवित होना, या स्वर्ग, या नरक कुछ भी नहीं बचेगा। अत; मूल ग्रंथ क़ुरआन के अनुसार मनुष्यों से संबंधित को ही प्रलय के रुप में ग्रहण कीजिए। मनुष्यों के अंत्यकाल से संबंधित को ही प्रलय समझना चाहिए, पंच महाभूतों(तत्वों)से संबंधित

को प्रलय नहीं समझना चाहिए। मनुष्यों से संबंधित प्रलय में, जीव शिशु शरीर को समाधि के रुप में प्राप्त करता है। और उस समाधि से जगवाया जाता है। परन्तु विश्वप्रलय में, ईश्वर के अलावा जब अन्य कोई न बचें, जीव का अस्तित्व ही न रहे, शरीरों(समाधियों)हो, या जीव हो, जब कुछ भी न बचें तो उस प्रस्ताव के बारें में प्रस्ताव लाने की आवश्यकता नहीं है। इसलिए बुजुर्गों ने मनुष्यों से संबंधित को ही प्रलय कहा ग्रहण करना चाहिए। क़ुरआन ग्रंथ में 80 वाँ अध्याय अ-ब-स सूर; में 37 वाँ आयत में कहे अनुसार प्रलय का दिन समझ में आ गया होगा। अब 82 सूर; अल इनफ़ितारि में 4 वाँ आयत में जब कब्रें कुरेदी जायेगीं तब इंसान फिर से जी उठेगा क़ुरआन अवगाहना ग्रंथ में कहा गया। वास्तव में समादि जब कुरेदी जायेंगें मनुष्य पुन; जीवित हो उठेगा या समादि से बाहर आयेगा मनुष्य पुन; पैदा होगा,हमारा भी यही कहना है।

यहाँ हम सब को अच्छी तरह से समझ लेना चाहिए कि इसी सूर; में चौथा आयत बताने से पहले 1,2,3 आयतें इस प्रकार से हैं। 1) जब आसमान फट पड़े 2) जब तारे झड़ पड़ें 3) जब समुन्दर बहा दिए जायें यें तीन आयतें हैं। इन तीनों आयतों(वाक्यो) में बताया गया प्रलय के ही बारें में था, पंच महाभूतों के बारें में नहीं। केवल पंच महाभूतों से पैदा हुए जीवों के शरीरों से संबंधित प्रलय के बारें में था ज्ञात हो रहा है। यदि महाभूतों से संबंधित प्रलय ही होता तो आसमान ही न रहता। जब आसमान ही न रहता तो तारों का झड़ना न होता। अन्तिम प्रलय में न आसमान रहेगा, न तारे रहेंगें। पंच महाभूतों का प्रलय हुआ तो, पंच महाभूतों में से एक समुन्दर का अस्तित्व नहीं रहेगा, और समुन्दर बहाये नहीं जायेंगें। समुन्दर का बहा देना मतलब कई भागों में बँट जाना। इसका मतलब है समुन्दर वहाँ रहेगा न ! इसी प्रकार से आसमान भी फट पड़ा परन्तु पूर्णत; समाप्त नहीं हुआ। इससे कहा जा सकता है कि प्रलय पंच महाभूतों का

नहीं, पंच महाभूतों से पैदा हुए शरीरों को नष्ट करने के लिए व्यवस्थित प्रलय होता है कह सकते हैं। इस वाक्य के बारें में हदीस के पंड़ितों ने विवरण करते हुए क़ुरआन ग्रंथ इस प्रकासे लिखा गया।

81 वाँ तुत् तक्वीर में 6 वाँ आयत में जब समुन्दर सुलगाए जायें लिखा गया। यहाँ समुन्दर बहा दिये जायें लिखा गया। दोनों आयतों में समन्वय कर देखें तो, क़ुरआन के अनुसार प्रलय के दिन अत्यंत तीव्र गति से भूकम्प आयेगा, यह एक प्रान्त तक ही सीमित न रहेगा, पूरी धरती को झटके लगेंगें यदि सोचा जाय, समुन्दर बहकर उसमें से शोले कैसे सुलगेंगें आप समझ सकते हैं। पहले उस महा भूकम्प की वजह से समुन्दरों के धरातल विभाजित होकर समुन्दरों का पानी उसके अंर्तभाग में फिसल जायेगा। अन्दर की सतह अत्यधिक उष्णता से लावा खौलने लगेगा। उस लावा के पास पानी पहुँचते ही उसका मौलिक पदार्थ अलग हो जाते हैं। उसमें ज्वलनशील पदार्थ ऑक्सीजन और हाईड्रोजन होते हैं। पूरा पानी बहकर शोले सुलगना निरन्तर क्रिया के विपरीत प्रतिक्रिया से आरम्भ होती है। नतीजा सारे समुन्दरों में शोले सुलगेंगें, यह हमारी कल्पना मात्र है। असली ज्ञान अल्लाह के अलावा अन्य को जानकारी नहीं है। यहाँ स्पष्ट रुप में यही प्रलय है न बताकर, यह विषय अल्लाह को ही मालूम है कहना बड़ी अच्छी बात है। इससे यह सूचित होता है कि महाज्ञानियों ने भी प्रलय के बारें में ठीक-ठीक जवाब नहीं दे सकें। वास्तव में यह एक मनुष्य के लिए ही नहीं, समस्त प्रपंच के लिए, समस्त युगों के प्रलय संभावित होने के बाद सहस्त्र(हजार)युगों के पश्चात् पुन; सृष्टि की रचना होगी परमात्मा का अंश भगवान ने ब्रम्हविद्या शास्त्र में सूचित किया। वास्तव में जीव शरीरों का प्रलय के बारें में हमने विशद रुप से बताया। परन्तु प्रपंच प्रलय के बारें में हम नहीं कह रहे हैं। आखिर में युग प्रलय कैसा होगा परमात्मा के अलावा कोई नहीं जानता है। अन्तिम प्रलय में

समस्त सृष्टि समाप्त हो जाती है कुछ नहीं रहता है परमात्मा ने अपने शास्त्र में सूचित किया।

पवित्र क़ुरआन ग्रंथ में 81 सूरतुत्-तक्वीर 7 वाँ आयत में "आत्माएँ शरीरों के साथ एक होगीं" कहा गया। इसका विवरण इस प्रकार से दिया गया। "सारे मानव मरण से पहले प्रपंच में जो आत्मा शरीरों के साथ सजीव थी, उसी प्रकार फिर से जिन्दा किया जायेगा।" इस आयत में पुर्नजन्म के बारें में पूर्णत; बताया गया, अल्लाह इन्सान को पुन; पैदा करवाता है जानने के बावजुद भी, वह कौन सा जन्म था? कब हुआ? कैसा हुआ होगा? इन्सान को मालूम ही न हो सका। परमात्मा ने विवरण से बताने के बावजुद, परमात्मा के बताये विषय समझ में न आना, अलग विधान से समझ में आना माया का ही प्रभाव है सूचित होता है। माया का मुख्य कार्य है मनुष्य को परमात्मा की ओर जाने से रोकना, तथा परमात्मा का ज्ञान मनुष्य की समझ में न आने देना। इसलिए माया, मनुष्य को अपने आधीन में रखकर परमात्मा ज्ञान से अनजान बना दिया। इसलिए पुर्नजन्म का विषय समझ में न आ सका और गलतफहमी में फँस गया। माया के गलतफहमी से बाहर निकलकर, परमात्मा का अर्थ जानने के लिए पवित्र क़ुरआन ग्रंथ में बताये गए आयतों में ज्ञान को ज्ञानदृष्टि से विवरण करते हैं।

परमात्मा नियम के अनुसार मनुष्य हो या कोई भी प्राणी हो पैदा होने के बाद उनका जीवन पहले बाल्य, यवन, कौमार्य, तथा वृद्धावस्था में बीतता है। मरण के साथ जीव उस शरीर को छोड़ता है। अब अच्छी तरह से विवरण कर देखें तो एक सजीव मनुष्य आकाश, वायु, अग्नि, जल, तथा भूमि इन पाँच धातुओं से प्रकृति संबंधित शरीर एक भाग के रुप में, तथा आत्मा से संबंधित जीवात्मा एक भाग में कुल मिलाकर दो भागों में हैं।ये दोनों भाग अर्थात् आत्मा संबंधित भाग तथा प्रकृति संबंधित भाग शरीर में

निवासकर, उस शरीर में जीवन गुजार कर अंत में मरण को प्राप्त करता है। मरण में जीवात्मा निवसित शरीर मात्र ही नष्ट होता है। जीव या जीवात्मा, मरण में शरीर के साथ नाश नहीं होता है। मरण शरीर के अन्दर पँचभूतों के लिए प्रलय होता है, शरीर के अन्दर निवास जीवात्मा के लिए नहीं सूचित होता है। शरीर के रुप में आकाश, वायु, अग्नि, जल, तथा भूमि जब प्रलय प्राप्त करते हैं वह मरण होता है। **मरण शरीर में हो रहे प्रलय मात्र को ही सूचित करता है।** शरीर के अन्दर समुद्र, समुद्र के रुप में न रहकर जब विभाजित हो जायें, शरीर के अन्दर अग्नि सामान्य न रहकर समुन्दर को भी जब सुलगाये, शरीर के अन्दर भूमि जब शान्त न रहे, शरीर के अन्दर आकाश शान्त न रहकर दो भागों में विभाजित हो जायें, शरीर के अन्दर वायु सामान्य न रहकर तीव्र होकर ध्वनि उत्पन्न करे, जब तारे झड़ पड़ें, जीव इस प्रकार के प्रलय को प्राप्त करें तो वह शरीर में न रहकर बाहर निकल जाता है, और यही मरण है। इस तकवीर 81 में आयतों 1,2,3 में, अ-ब-स सूर; 80 में आयत 37 में हजरत मोहम्मद (स) प्रवक्ता द्वारा पवित्र क़ुरआन में बतलाया गया।

80 वाँ सूर; में 21 वाँ आयत में "बाद में मौत दी, समाधि में पहुँचाया।" लिखा गया। ऐसा क्यों कहा क्योंकि मनुष्य का जीवन कुछ समय व्यतीत होने के बाद शरीर नष्ट होने पर मृत्यु होना प्रत्यक्ष सत्य है। ईश्वर के कहने अनुसार प्रत्यक्ष सब जान सकें मरण के बाद शरीर को छोड़ने के बाद जीव (जीवात्मा) का क्या होगा? इस प्रश्न का उत्तर मृत्यु देनेवाला अल्लाह, समाधि में पहुँचायेगा यह विषय अ-ब-स सूर; 21 वाँ आयत में बताया गया। यहाँ विवरण कर देखें तो, मनुष्य का मरण सब जानते हैं। उसके बाद क्या होता है कोई नहीं जानता है। लेकिन हमें जो जानकारी है वह इस प्रकार से है ! मनुष्य मरण के पश्चात् शरीर के अन्दर जीवात्मा तुरन्त नया सा बनकर, माता के गर्भ से प्रसवित शिशुशरीर के अन्दर पहुँचता है। सभी तरह से अन्धा जीवात्मा स्वयं अपने-आप शिशुशरीर

में अकेले प्रवेश नहीं करता है। सृष्टि के आदि से ही शरीर में उसके साथ रह रहे आत्मा के साथ, नया शिशुशरीर में प्रवेश करता है। नया शिशुशरीर के अन्दर प्रवेश करने में आत्मा जीवात्मा के लिए मार्गदर्शक बनती है। मृत्यु के पश्चात् एक क्षण भी विलंब हुए बिना जीवात्मा नये शरीर में प्रवेश करने को अ-ब-स सूर; 21 वाँ आयत में "मौत दी, समाधि में पहुँचाया" कहा गया। जीवात्मा आत्मा के साथ जब नये शिशुशरीर में प्रवेश करता है, उसे समाधि में पहुँचना कहा जाता है। समाधि अर्थात् माता के गर्भ से पैदा हुआ शिशु शरीर सूचित होता है। एकबार मरण प्राप्त करने के बाद अर्थात् शरीर छोड़ने के बाद जीव दूसरी बार समाधि से जगवाया जाता है। शिशुशरीर को समाधि कहकर बातें कर रहें थे न ! जीव तथा जीव के साथ रह रहा आत्मा दोनों शरीर में निक्षिप्त होकर रहने को समाधि हुआ जीव बता रहे थे। सृष्टि के आदि से ही समस्त जीवों का पैदा होने का विषय में सभी पर समानता से अमल होता है, इसलिए इसे समाधि या समादि कहा गया पहले भी बताया गया। एक मनुष्य के जीवन के आरम्भ में शिशुशरीर या नया शरीर यानि समाधि से मनुष्य जगवाया जाता है।

यहाँ समाधि से जगवाना अर्थात् शिशुशरीर के अन्दर पहुँच कर निक्षिप्त हुआ जीव को, पुन; प्रपंच सचेत में लाना। प्रतिदिन हम सब सो रहे व्यक्तियों को जगाते रहते हैं। सर्व प्रथम शिशुशरीर के अन्दर जीव को बाह्य ध्यान में लाना ही समाधि से जगाना कह सकते हैं। प्रतिदिन मनुष्य निद्रा में जाते ही शरीर से निक्षिप्त हो जाता है। उस मनुष्य को शरीर के अन्दर से दूसरा मनुष्य जगाता है। जीवन के आरम्भिक दशा में अर्थात् सर्वप्रथम जगानेवाला ईश्वर ही है स्मरण रहना चाहिए। आदि में जगाने को समाधि कहते हैं। उसके पश्चात् जब भी जागते हैं वह निद्रा से जागना कहलाता है। नींद सभी को एक जैसा आती है, नींद से सभी जागते भी हैं एक जैसे ही, फिर भी यह आदि में किया गया कार्य नहीं है। इसलिए इसे समाधि से जागना नहीं कह सकते हैं। जीवन में पहली बार जगाये जाने

के बाद जब भी जागें, या कोई भी जगायें वह निद्रा से जागना कहलाता है, समाधि से नहीं। जीवन के प्रथम भाग में शिशुशरीर ही समाधि है, आदि में जगवाने को समाधि से जगवाना कहते हैं। जीवन में निद्रा से कोई भी जगवा सकता है। किन्तु आदि में शिशुशरीर से कोई किसी को जगा नहीं सकता है। यह मात्र ईश्वर के लिए ही संभव है।

ईश्वर ने मनुष्य की सृष्टि की, उसे जीवन प्रदान किया, मृत्यु दी, बाद में समधि में पहुँचाया। इस बात से कोई भी मनुष्य इन्कार नहीं कर सकता है। इसे ही भगवद् गीता में जो पैदा होता है उसका मरना निश्चित है, जो मरता है उसका पैदा होना निश्चित है इतना ही नही मनुष्य के लिए बाल्य, यवन, कौमार्य और वृद्धावस्था उसके बाद मरण निश्चित है कहा। यही विषय पवित्र क़ुरआन ग्रंथ में अ-ब-स सूर; 19,20,21,22 आयतों में "अल्लाह ने उसे पैदा किया, उसके कर्म(किसमत) का निर्णय किया। बाद में उसके जीवन मार्ग को सुगम बनाया। फिर मौत दी, समाधि में पहुँचाया। दोबारा उन्होंने(अल्लाह ने) मनुष्य को समाधि से जगाया।" इस विषय को अल्लाह ने पूर्णत; बर्हिगत कर कहने के बावजुद, सब लोगों को इस बात का प्रत्यक्ष प्रमाण मिलने के बावजुद, माया के प्रभाव की वजह से यह विषय अत्यन्त रहस्यमयी बन कर रह गया है। इतना ही नहीं गलत समझ में आया। लोगों ने समझा समाधि का अर्थ है मरे हुए व्यक्ति को दफनाना या जमीन में गाड़ देना। मनुष्य के मृत देह को दफनाना क़ब्र कहलाता है, समाधि नहीं। **शरीर को ढ़ंककर रखने को क़ब्र, जीवात्मा को ढ़ंककर रखने को समाधि कहते हैं समझ्ना चाहिए।**

मौत दी, समाधि में पहुँचाया इन आयतों के अनुसार समझ सकते हैं कि मनुष्य को मरण प्राप्ति के बाद नया शिशुशरीर में पहुँचाया जाता है। समाधि में पहुँचे व्यक्ति को उस शरीर समाधि से जगवाया जाता है। समाधि से किसे जगवाया जाता है यदि प्रश्न कर देखें तो, चैतन्य आत्मा

www.thraithashakam.org

संबंधित जीवात्मा के बारें में सूचित होता है। शिशुशरीर के गहराई में पहुँचा जीव को बाह्य ध्यान में जगाना ही, जीव को समाधि से जगाना है। जीव को जगवाते समय शरीर की स्थिीति क्या होती होगी सूर; तकवीर में 7 वाँ आयत में कहा गया प्रलय के बाद जब जानों(शरीरों में) के जोड़ बनें अर्थात् सारे इन्सान मरण से पहले प्रपंच में जो जानें सजीव शरीर के साथ रहती थीं उसे नवीन रुप में जिन्दा कर दिये जायेंगें। हदीस पंडितों के अनुसार, इन्सान मरने से पहले जिस शरीर के साथ रहता था उसी हड्डियों, रक्त मांस के शरीर के अन्दर ही जिन्दा किया जायेगा। नवीन रुप में जिन्दा करना कुछ लोगों ने शरीर के बारें में गलत अर्थ लगा लिया, उनका मानना हैं कि मनुष्य मरने के बाद भी जीव पुराने शरीर को ही धारण करता है। यह बहुत बड़ी गलतफहमी है क्योंकि मनुष्य मरण प्राप्ति के बाद उसका मृतदेह शिथिल होकर खत्म हो जाता है। शरीर पंचतत्व(पंचमहाभूत) आकाश, वायु, अग्नि, जल, और भूमि में मिल जाता है। पुन; जो नया शरीर जीव को समाधि के रुप में लब्ध होता है, वह भी पंचतत्व से बना हुआ होता है। तथा पहले शरीर या पुराना शरीर, जिस प्रकार से रक्त, हड्डियाँ, मांस से बना था उसी प्रकार से नया शरीर भी बना रहेगा किन्तु यें सब नये होंगें। पुराने सभी प्रलय(मरण) में समाप्त होकर प्रत्यागमन में नवीन, जन्म में प्राप्त होते हैं। प्रवक्ता जी का कहना था उसी शरीर के साथ जगवाया जायेगा, इसका तात्पर्य है वह शरीर पुराने शरीर की तरह ही होगा। सड़ा नष्ट हुआ शरीर नहीं, ज्ञात होना चाहिए। परमात्मा अनेक शरीरों को नष्ट कर सकता है। और अनेक शरीरों की सृष्टि कर सकता है। ईश्वर सर्वशक्तिमान है, कुछ भी कर सकता है। नये शरीरों की सृष्टि का सामर्थ्य रखनेवाला ईश्वर के लिए नष्ट हो गए शरीरों से कोई मतलब नहीं है। नये शरीर की सृष्टि कर पानेवाला ईश्वर को पुराने शरीर की मरम्मत करने की आवश्यकता नहीं है। इसलिए पुराने शरीर के जैसे ही नये शरीरों के अन्दर से दोबारा

मनुष्य को जगाता है। नया शरीर ही समाधि, और जीवन में मनुष्य की पहली याद ही समाधि से जागना। मनुष्य का शरीर नष्ट होना, मर जाना, वापस नये शरीर में पैदा होना जगत में प्रत्यक्ष रुप से हो रहा सत्य है। ईश्वर सत्य स्वरुपी है। इसलिए ईश्वर का वचन प्रत्यक्ष प्रमाण है, अत; ईश्वर ने जो भी कहा था वो हो रहा है। जो हो रहा है उसे विशद कर देखने पर ही उसकी सत्यता की जानकारी होगी। धरती पर अनेक लोग पैदा होकर अपने गत जन्म के बारें में बताते रहते हैं। इसके आधार पर मनुष्य के पुर्नजन्म होते हैं सिद्ध होता है। पुर्नजन्म में प्रत्यक्ष रुप से ईश्वर के कहे अनुसार, शरीर समाधि से मनुष्य जागता है। सभी जानते हैं मनुष्य नये शरीर के साथ ही पैदा होता है। लोगों के नजर के सामने हो रहें, सत्य को न ग्रहण कर, अभी नहीं भविष्य में कभी भी हो सकता है, सोचना गलतफहमी है। भविष्य में कभी भी हो सकता है कहना, ईश्वर के वचन को बरगलाना कहा जाता है। इस वजह से सत्य और असत्य में फँसा मनुष्य को शंका होने की संभावना रहती है। हो रहा सत्य से अनदेखा करनेवाला व्यक्ति वास्तव में आँखें होते हुए भी अंधा है। वह ज्ञाननेत्र रहित व्यक्ति होता है।

पवित्र क़ुरआन ग्रंथ में हो, या पवित्र बाइबल में हो, या परम पवित्र भगवद् गीता में हो प्रवक्ताओं द्वारा कहलवाये ईश्वर के सारे वाक्य हो, उन वाक्यों को मनुष्य को यथोचित समझ में न आ सका। इस वजह से बताया गया एक,और समझ में आया दूसरा एक। इस प्रकार से समझने की वजह से ईश्वर का सन्देश मूल ग्रंथ के रुप में हम सभी के समक्ष होने के बावजुद, ग्रंथों में बताये गये सत्य को हम सब पूर्ण रुप से समझ नहीं सकें। हो सकता है ईश्वर के कहे गये कुछ ही विषय मनुष्य की समझ में आया हो। किन्तु सारे वाक्य समझ में नहीं आए कह सकते हैं। इसका कारण क्या हो सकता है? ईश्वर का बताया गया विषय मनुष्य पूर्ण रुप से ग्रहण क्यों नहीं कर पा रहा है? योचना करने से इस प्रकार से मालूम

पड़ा है कि ईश्वर मनुष्य को पैदा करने से पूर्व प्रकृति को बनाया। पश्चात् मनुष्य, तथा अन्य प्राणियों की रचना की। ईश्वर द्वारा बनी प्रकृति पाँच भागों में विभाजित हुई। उन भागों द्वारा मानव शरीर बना। मानव शरीर के अन्दर परमात्मा संबंधित आत्मा, तथा जीवात्मा दो आत्माएँ निवास करती हैं। परमात्मा सहित शरीर के अन्दर तीन आत्माएँ निवास रहती हैं। एक सजीव शरीर के अन्दर तीन आत्माएँ, पाँच प्रकृति भाग निवास करते हैं। परन्तु तीनों आत्माओं में परमात्मा को बिना गिनती के लेना धर्म है। इसलिए एक शरीर के अन्दर जीवात्मा, तथा आत्मा को मात्र ही कहना पड़ रहा है। मुख्य रुप से प्रकृति द्वारा शरीर में बनी, जिसे माया(शैतान) कहा जाता है। मरण से शरीर नष्ट हो जाता है, जीवात्मा, आत्माएँ नष्ट न होकर दोबारा जन्म जिस प्रकार से लेते हैं, वैसे ही माया भी शरीर के अन्दर प्रलय में नाश हुए बिना, जीव के साथ प्रयाण करते हुए नये शरीर में पहुँचती है।

यहाँ मुख्यरुप से ध्यान देनेवाला विषय यह है कि ईश्वर जब सृष्टि की रचना कर रहे थे सर्वप्रथम प्रकृति की रचना की। प्रकृति द्वारा सभी जीवों के शरीरों को बनाया। प्रकृति द्वारा बनें शरीर मरणकाल में नष्ट हो जाता है, किन्तु प्रकृति नाश न होकर रह जाती है। सृष्टि आदि में समुद्र, भूमि, आकाश, अग्नि, वायु जैसे थें सृष्टि के अंत्य तक वैसे ही रहेंगें। सृष्टि के अंत्य महा प्रलय से ही प्रकृति नष्ट होगी। महा प्रलय में भी नाशरहित एक ईश्वर ही है। प्रपंच रहे या न रहे चिर स्थाई से रहनेवाला एक परमात्मा ही है। प्रपंच की सृष्टि होने के बाद जितने बार भी शरीरें नष्ट हो जाय, जीव जितने बार भी पैदा हो, जिस प्रकार से प्रकृति नाश नहीं होती है, वैसे ही प्रकृति जनित माया भी नष्ट नहीं होती है। यदि प्रकृति को विभाजित कर देखें तो प्रकृति पाँच भागों में, माया का विभजित करें तो माया तीन भागों में हैं। महाप्रलय तक जिस प्रकार से प्रकृति नाश

हुए बिना है, उसी तरह से महाप्रलय तक माया भी तीन भागों में नाश हुए बिना रहती है।

उनका(परमात्मा का) प्रतिद्वन्दी बनकर रहे परमात्मा ने स्वयं माया की सृष्टि की। परमात्मा के विरुद्ध कार्य करे परमात्मा ने ही आज्ञा दी। परमात्मा द्वारा सृष्टि की गयी माया सर्वकाल विनय, विनम्रता से परमात्मा की आज्ञा का पालन करती रहती है। परमात्मा पुरुष तथा प्रकृति स्त्री के रुप में हैं। स्त्रीलिंग प्रकृति द्वारा परमात्मा ने माया की सृष्टि की माया को स्त्रीतत्व के रुप में ही कहा जाता है। परमात्मा की आज्ञानुसार प्रकृति से पैदा हुई माया सृष्टि के आदि से ही परमात्मा के आज्ञानुसार परमात्मा के विरुद्ध कार्य करते हुए लोगों से भी करवा रही है। माया लोगों से किस प्रकार से कार्य करवाती है जो इस प्रकार से है। माया, तीन भागों में गुणों के रुप में मनुष्य के सिर के अन्दर विराजमान है। गुणों में ही जीव को निवास करवाती है। सात्विक, राजस, तामस गुण भागों की माया मानव जाति को परमात्मा की ओर जाने से रोकने का कार्य स्वयं करती है। ईश्वर ने अपने प्रवक्ताओं द्वारा अपने ज्ञान को महाग्रंथों द्वारा बतलाया, परन्तु माया ने अपने गुणों द्वारा अपने भावों को मनुष्यों को समझा रही है। किसी प्रवक्ता द्वारा परमात्मा का धर्म कहलवाया जाता है तो, माया के प्रभाव से मनुष्य को दूसरा ही समझ में आता है। इस वजह से परमात्मा का ज्ञान हर किसी के समझ से परे हो रहा है। परमात्मा एक भाव से समझाते हैं तो माया अपने प्रभाव से मनुषय को अन्य भाव से समझ में आता है। इस वजह से भगवद् गीता हिन्दूओं(इन्दूओं) को, बाइबल ईसाईयों को, क़ुरआन मुस्लिमों को परमात्मा के कहे भाव के अनुसार समझ में न आ सका कह सकते हैं।

इस धरती पर किसी भी मजहब का व्यक्ति हो, उसके सिर के अन्दर त्रिगुण रुप में माया विराजमान रहती है। किसी भी मजहब केव्यक्ति

के लिए शैतान या माया से पार लगाना असंभव है। यह वाक्य मैंने नहीं भगवद् गीता में कहा गया है। *"गुणमयी मम माया दुरत्यया "* मेरी गुणमयी माया दुस्तर है कहा गया। मूल ग्रंथों में भी माया दुस्तर है उस माया से पार होना कठिन है कहा गया। माया, मनुष्य में रहकर भी पहचान में न आना, तुम ईश्वर के मार्ग में हो यकीन दिलवाकर सब को अपने मार्ग में चलवाती है। हम जिन्हें ज्ञानी व्यक्ति समझते हैं वें भी माया के भ्रम में पड़कर, उसे ही ईश्वर के भाव के रुप में मान लेते हैं, और परमेश्वर भाव से अनजान रह जाते हैं। हमारा बताया गया पुर्नजन्म का विषय हो, या समाधि का विषय हो माया के प्रभाव की वजह से ईश्वर का भाव दब जाने की वजह से मृत शरीर को समाधि कहना, पुर्नजन्म से इन्कार करना, अनेक युगों के अंत्य को प्रलय कहना सब गलत समझा गया। माया ने आप लोगों को धोखे में रखा हमने (मैं+मेरी आत्मा) कहा भी, माया ने हमें उनकी नजर में गलत दिखलाया, और हमारी बातों को अनसूना करवाया। हर किसी को भ्रम में रखा कि वे जिस मार्ग में चल रहे हैं वह ही दैवमार्ग है, माया इस प्रकार भ्रमित करने की वजह से ही सारे धर्म, अधर्म बनकर गए हैं। अधर्मों का नाश कर दोबारा धर्म की स्थापना केवल ईश्वर ही कर सकते हैं, हम जैसे मनुष्य नहीं।

परमात्मा की महानता को कम करनेवाले भावों को, जो दैवमार्ग में स्वयं को ज्ञानी मानते हैं माया, उन्हीं से उन भावों को कहलवाती लेती है। परमात्मा पर पूर्ण विश्वास से जो सदा विनम्र रहते हैं उन्हीं से उनके जानकारी के बिना परमात्मा पर संन्देह आना, परमात्मा की महानता को उन लोगों द्वारा निम्नस्थ भावों के रुप में कहलवा लेती है। एक स्थान पर परमात्मा की कही बातों का महत्व निम्नस्थ कर उसी के विपरीत बातों को दैवज्ञानियों द्वारा कहलवाती है। इस प्रकार से कई ज्ञानियों ने माया के प्रभाव में आकर बिना सोचें समझें परमात्मा ज्ञान के बारें में कहते रहते हैं। उनका इस प्रकार से कहना परमात्मा के निकट कहें वाक्य में भिन्नता

होती है। पिछले हुई प्रत्यक्ष घटनाएँ भी भिन्न ही होती है। माया मनुष्य को परमात्मा ध्यान से परे कर, मनुष्य से अपने भाव कहलवाती है। परमात्मा का भाव, तथा उनका का भाव, दोनों एक ही है भ्रमित करती है। इस विषय में आप को अच्छी तरह से समझना हो तो, जब एक दैवज्ञानी दैवत्व का बोध कर रहा हो तो वह ज्ञान परमात्मा का ही ज्ञान है उन्हे कैसे विश्वास दिलाती है और कहलवाती है उदाहरण के रुप में देखें।

यह विषय कहने से पूर्व हमने 18-09-2011 तिथि को नेशनल ज्योग्राफिक टीवी चैनल में एक प्रोग्राम देखा था। यह "टेन यीयरस ऑफ ओसामास टेरर्" (Ten Years Of Osama's Terror) प्रोग्राम में पाँच इराकी आतंकवादी एक जगह खड़े थे। वें पाँचों आतंकवादी काले रंग के कपड़े पहने हुए चेहरे पर नकाब धारण किये हुए थे। उन पाँचों उग्रवादियों के आगे गुलाबी रंग के कपड़े पहने हुए एक व्यक्ति बैठा हुआ था। वें पाँचों उग्रवादी इराकी थें, आगे बैठा हुआ व्यक्ति अमेरिकी नागरिक था। उग्रवादियों ने उस टूरिस्ट अमेरिकी नागरिक को बंधक बनाया हुआ था। इराकी उग्रवादी अमेरिका को अपना शत्रु देश मानते थे, उस देश पर अपना विरोध जताने के लिए उस अमेरिकी नागरिक को दंड देना चाहते थे, तथा हम उग्रवादी कितने ताकतवर हैं अमेरिका को जताने के लिए, उनके सामने बैठा अमेरिकी नागरिक को धक्का देकर सिर काट डाला। उस दृश्य का विडियो निकालकर अमेरिका को भेजा। वही दृश्य टीवी में दिखलाया गया। उस दृश्य को अकेला मैं ही नहीं उस समय में मेरे कमरे में कुछ लोग बैठे थें उन लोगों ने भी उस दृश्य को देखा। मेरे साथ जिन लोगों ने उस दृश्य देखा उन्हें वह घटना बहुत ही क्रूरता भरी लगी। उन लोगों ने "यह बहुत ही क्रूर कार्य है, अगर अमेरिकी सरकार ने उग्रवादियों का कुछ बुरा किया हो तो उस सरकार पर क्रोध करना चाहिए था। उन्हें अपना बदला अमेरिकी सरकार से लेना चाहिए था। जो लोग अमेरिकी

सरकार में रहकर उनका बुरा किया उन नेताओं से शत्रुता करनी चाहिए थी। और उन्हें हिंसा का शिकार बनाना चाहिए था, या मारकर अपना गुस्सा निकालना चाहिए, कहा।" यहाँ इस बारें में योचना की जाय। तो सरकार और प्रजा दोनों अलग-अलग हैं। सरकार शासन करती है, प्रजा शासित होती हैं। प्रजा अपना जीवन जीती हैं, अन्य देश के वासी उनके शत्रु नही हैं। बिना किसी दुश्मनी के प्रजा पर उग्रवादियों का बदला लेना क्रूरता, निर्दयता के अलावा और कुछ नहीं है, यह इन्सानों का कार्य नहीं हैं, अमानवीय कार्य है, उग्रवादी होने मात्र से ही किसी पर गुस्सा किसी दूसरे को सजा देना, क्या उग्रवादियों को सोच और समझ नहीं होती है? दुश्मन पर हमला करना, मार डालना युद्ध की नीति कहलाती है। परन्तु जो दुश्मन हैं ही नहीं उन पर हमला करना, मार डालना युद्धनीति नहीं कहलायेगी। यह मनुष्य द्वारा किया गया क्रूरता कहलाता है। आपका क्या कहना है।" उन लोगों ने मुझसे पुछा। मैंने कहा, मुझे या आप सबको इराकी उग्रवादियों ने जो कुछ किया गलत नजर आता है, किन्तु उन्हें वही सही लगता है। हम सब उस कार्य को क्रूर बताते हैं, लेकिन उन्हें वीरों का तथा साहसियों का कार्य नजर आता है। एक व्यक्ति का कार्य सामनेवाले के नजर में गुनाह हो सकता है, किन्तु उस व्यक्ति के लिए वह कार्य समर्थनयुक्त कार्य होता है। इसी तरह की एक और घटना, इस बीच मुंबई में हुई एक घटना में उग्रवादियों के हमले के बारें मे है, उग्रवाद का समर्थन करनेवाले उग्रवादियों के समर्थकों से मैंने प्रश्न किया। "मुंबई शहर में रहनेवाले निर्दोष लोगों को उग्रवादियों ने मार डाला क्या यह न्यायसंगत है? क्या ईश्वर सहमत होगा? उनका जवाब सुनकर मुझे आश्चर्य हुआ। उसने, एक देश के राजनेता को हमारी ताकत दिखाने के लिए उस देश की जनता पर हिंसा करना कोई गुनाह नहीं है। उस देश के मुख्य नायक को बदलने के लिए या उनका इम्तिहान लेने के लिए उनके राज्य की जनता को तकलीफ देना या मार डालना कोई गुनाह नहीं

है। अमेरिका देश के राष्ट्रपति में बदलाव लाने के लिए उस देश के नागरिक को जान से मार डालना कोई गुनाह नहीं होगा कहा। जवाब में मैंने " ये कैसा न्याय है? जिससे तुम्हारी दुश्मनी हैं उस पर हमला न करके जिससे तुम्हारी न दुश्मनी है, न ही कोई संबंध है उन पर हमला करना पाप कार्य होता है। ईश्वर ऐसे कार्यों से जरा भी सहमत नहीं होगा। जैसे- एक घर का मालिक दूसरे घर का मालिक को हानि पहुँचाता है, पहले घर का मालिक ने दूसरे घर के मालिक के बेटे को बाजार में मारने की कोशिश करे तो क्या समाज इससे सहमत होगा? जिस प्रकार से एक निंदोष बच्चे को मारना अन्याय, तथा अवैद्ध होता है। उसी प्रकार से अमेरिकी राष्ट्रपति(घर का मालिक) जॉर्जबुश पर गुस्से से उस देश(घर) की निंदोष जनता पर हिंसा कर मार डालना भी अन्याय, अवैद्ध, तथा अमानवीय होता है, ऐसे व्यक्ति ईश्वर की दृष्टि में सजा के हकदार है, कहा।

मेरी बातों को सुनकर उस व्यक्ति ने हँसकर, अल्लाह की नजर में क्या हम सजा के हकदार हैं? शायद तुम्हे मालूम है या नहीं अल्लाह ने हमारे ग्रंथ में सूर; अन्फाल में 28 वाँ आयत में कहा था। " जान रखो कि तुम्हारे माल और तुम्हारी औलाद सब फितना है अल्लाह के पास बड़ा सवाब है " दिया गया है। इसका हमारे हदीस पंडितों ने इस पर विवरण कुछ इस प्रकार से दिया है। अब की जिन्दगी और बाद की जिन्दगी के लिए तुम्हारे घर में कोई भी इम्तिहान हो सकती है। तुम्हारी पत्नी बीमार पड़ सकती है, तुम्हारा जमीन-जायदाद छुट सकता है, तुम्हारी औलाद छोटे-छोटे बच्चे किसी घटना में मर सकते हैं। या तुम विकलांग पैदा हो सकते हो। तुझे परखने के लिए इस प्रकार के दर्द अल्लाह दे सकते हैं। दो वर्ष का तुम्हारे बेटे को भयंकर लाइलाज बीमारी हो सकती है वह बालक उस बीमारी से तड़पना ही तुम्हारे लिए अल्लाह का इम्तिहान है। अल्लाह

तुम्हारा इम्तिहान लेने के लिए तुम्हारे चारों ओर व्यक्तियों, तथा जमीन-जायदाद का उपयोग कर सकते हैं। जब अल्लाह ही एक मनुष्य को परखने के लिए उसके बेटे को रोगग्रस्त, या विकलांग बना सकता है तो और अल्लाह के लिए यह सामंजस्य कार्य हो सकता है तो, हमारे लिए अमेरिकी लोगों को परखना या उन लोगों में बदलाव लाने के लिए उस देश के एक सामान्य नागरिक को जान से मार डालना कोई गुनाह नहीं होगा उसने ऐसा विवरण दिया।

उसने महान ग्रंथ से एक वाक्य को लेकर उदाहरण के साथ विवरण दिया तो मैं उस समय उसके विवरण का जवाब नहीं दे सका। किन्तु मुझे सन्देह हो रहा था क्या अल्लाह इस प्रकार से कह सकते हैं और मैंने 16-05-2010 में मेरे परिचित एक इस्लाम के बुजुर्गों से, अल्लाह के बारें में बतानेवाले दो पंड़ितो के पास जाकर मैंने "एक व्यक्ति ने पवित्र क़ुरआन में एक वाक्य के बारें में विवरण दिया है। उस वाक्य में मुझे थोड़ी शंका हो रही है। उस बारें में आप विवरण दीजिए" मैंने पुछा। उन्होंने इस प्रकार कहा।

हदीस ज्ञानी :- पवित्र क़ुरआन में किस सुर; का यह वाक्य है?

मैं :- सुर; अन्फाल, आयत 28.

हदीस ज्ञानी :- उसमें अल्लाह इन्सान से किसी भी प्रकार का इम्तिहान ले सकता है सूचित किया गया है। इसमें तुम्हे क्या समझ में नहीं आया?

मैं :- अल्लाह के बताए वाक्य में मुझे कोई सन्देह नहीं है। क्योंकि क़ुरआन ग्रंथ में बताया गया अल्लाह का संदेश, अल्लाह द्वारा भेजा गया वाक्य सत्य है। मेरा सारा सन्देह उस वाक्य को सही तरह से समझने से है, मैंने क़ुरआन ग्रंथ को पूरे विश्वास से पूरा नहीं थोड़ा बहुत पढ़ा है। उसे पढ़कर मुझे जो समझ में आया, और उन्होंने जो कहा दोनों में थोड़ा

अन्तर है। इसलिए इसी विषय के बारें में 29 वाँ सूर; अन्कबूत में 2 वाँ आयत में ऐसा दिया गया है। " क्या लोग इस घमन्ड में हैं कि इतनी बात पर छोड़ दिये जायेंगें कि कहें हम ईमान लाए और उनकी आज़माइश न होगी।" यहाँ "आज़माइश" शब्द कौन सा अर्थ देता है थोड़ा बहुत सूचित हो रहा है। अल्लाह पर जहाँ विश्वास नहीं रहता वहाँ आजमाइश अलग अर्थ दे सकता है। परन्तु जहाँ अल्लाह पर विश्वास होता है वहाँ आजमाना विशेष अर्थ देता है। इसी विषय से सम्बंधित भगवद् गीता में राजविद्या राजगुह्य योग में 22 वाँ श्लोक को सारे हिन्दू समझ न सकें और उन्हें भी गलतफहमी हो गयी। उस श्लोक के भाव को सारे स्वामीजीयों ने ईश्वर के बताये भाव के विपरीत भाव बताये। उनका बताया गया सौ फीसदी असत्य था, फिर भी उन्होंने जरा भी योचना नहीं की और उसे सत्य माना। भगवद् गीता में एक श्लोक ही नहीं बल्कि अनेक श्लोकों में भावदोष आ पड़ा। बतानेवाले सारे आध्यात्मिकवेत्ता भटक गए, क्योंकि माया ने उन्हें अपनी गलती को पहचानने का अवसर भी नहीं दिया। मेरा मानना है कि कुछ बाइबल में, कुछ क़ुरआन में प्रवक्ता के बताये ज्ञान को शायद लोगों ने ठीक से समझा ही न हो।

प्रवक्ता के बताए भाव को सब ने ठीक से नहीं समझा कहने के लिए एक विषय को उदाहरण के तौर पर गौर करते हैं। "आदर्श महिला हजरत आयषा" नामक पुस्तक में 141 पन्नें पर एक जगह पर कुछ इस प्रकार से लिखा हुआ था। हजरत आबू सय्यद खुदरी जब मर रहे थे उन्होंने नये वस्त्रों को मँगवाकर पहना। कारण पुछा गया "मुस्लिम जिन कपड़ों में मरता है उन्हीं कपड़ों में जगाया जाता है" उन्होंने कहा। हजरत आयषा को जब इस बारें में मालूम पड़ा। "हे अल्लाह ! आबू सय्यद पर रहम करो। दैवप्रवक्ता के नजर में कपड़ों का अर्थ होता है कर्म(आचरण)। लोगों को कयामत के दिन नग्न शरीर से, जगवाए जायेंगें दैव प्रवक्ता ने स्पष्ट रुप से कहा था।" मोहम्मद प्रवक्ता की चौथी पत्नी हजरत आयषा ने

कहा था। इस समाचार के अनुसार महाप्रवक्ता जी के भाव को न समझकर अलग तरह से समझा गया, अभी कई वाक्यों को उसी तरह से समझने की वजह से कई लोगों को गलतफहमी हो सकती है ! न

हदीस ज्ञानी :- कहीं थोड़ी सी गलतफहमी हो सकती है। किन्तु पूर्णत; भाव ही गलत होगा कहीं नजर नहीं आ रहा है। अगर संदर्भ के अनुसार देखें तो अर्थ पर्याप्त होगी। संदर्भ के अनुसार न देखें तो थोड़ा भाव बदल सकता है। यदि कभी भी सन्देह हो तो पुछकर निवृति किया जा सकता है। आपस में चर्चा कर दैवज्ञान को अच्छी तरह से समझा जा सकता है।

मैं :- मेरा विचार है चर्चा करने से दैवज्ञान बिना किसी संदेह के समझ में आयेगा इसलिए दैव संदेशों को अच्छी तरह से जाननेवाले आपसे पुछ रहा हूँ। आप से विनती है कि मेरी शंकाओं का समाधान कीजिए। पहला प्रश्न है, क्या मनुष्य एकबार ही पैदा होता है ? या अनेकों बार पैदा होता हैं ?

हदीस ज्ञानी :- मनुष्य एक ही बार पैदा होता है, एक ही बार मरता है। न ही अनेकों बार पैदा होता हैं, न ही अनेकों बार मरता है।

मैं :- इसे अल्लाह ने कहा या मनुष्य ने कहा ?

हदीस ज्ञानी :- यह पवित्र क़ुरआन में हजरत मोहम्मद प्रवक्ता जी ने दैवसंदेश में कहा।

मैं :- मुझे पूर्ण विश्वास है कि प्रवक्ता जी के कहे गए वाक्य पूर्णत; सत्य है। प्रवक्ता जी ने दैव संदेश बताया। दैवसंदेश सर्वदा शासनबद्ध होता है। शासन, अर्थात् होना निश्चित है। परन्तु हुई प्रत्यक्ष घटना के आधार पर देखा जाय तो प्रवक्ता के कहे वाक्य को हम सब ने गलत समझा सूचित हो रहा है। मनुष्य एक ही बार जन्म लेता है तो अनेक प्रश्न उठ खड़े होंगें, अन्तत; प्रश्न निरुत्तर रह जायेगा। यदि कोशिश कर जवाब देना चाहें तो,

उस जवाब में शास्त्रबद्धता न होगी। क्योंकि शास्त्रबद्ध रहित जवाब सत्य नहीं होता है। अत; प्रवक्ता जी ने, प्रलय में पुन; शरीर के साथ मनुष्य जगवाया जायेगा कहना सत्य है, किन्तु एकबार, या अनेकबार होगा समझने में शायद गलतफहमी हुई होगी शंका हो रही है। यदि मनुष्य एक ही पैदा होता है मानें तो तुरन्त एक प्रश्न आयेगा। जो इस प्रकार है यदि मनुष्य एक ही बार पैदा होता है तो प्रलय में एक ही बार जगवाया जायेगा, जगवाये जाने के बाद के जीवन को क्या कहा जायेगा? क्यों मनुष्य को प्रलय काल में जगाया जाता है?

हदीस ज्ञानी :- मनुष्य अपने जीवन में किये गए अच्छे कार्य, तथा बुरे कार्यों को प्रलयकाल में जब जगवाया जायेगा अल्लाह उनके किये गए कार्यों के अनुसार स्वर्ग तथा नरक में भेजता है। इसे मरण के बाद जीवन कहते हैं। मनुष्य के किये गए कर्म लिखित के अनुसार मनुष्य को स्वर्ग तथा नरक को भोगने के लिए जगवाया जाता है।

मैं :- एक मनुष्य अपने जीवन में किये गए कार्यों के अनुसार(कर्म के अनुसार) पाप-पुण्यों के अनुसार दूसरे जीवन में या मरणोंपरान्त स्वर्ग तथा नरक(सुख-दुख) को अनुभव करने के लिए पैदा होता है या पुन; समाधि से जगवाया जाता है। यह पूर्णत; सत्य है। उस मरण के बाद वह जीवन कहाँ होता है, पुछा जाय तो उत्तर मिलेगा स्वर्ग और नरक में। यदि पुछा जाय कि स्वर्ग और नरक कहाँ पर हैं, धरती पर या कहीं और, तो इसका सही उत्तर, और शास्त्रबद्ध उत्तर नहीं मिलेगा। किसी ने भी स्वर्ग तथा नरक को देखा है, कोई आधार नहीं हैं। क्या स्वर्ग और नरक सच नहीं हैं पुछने पर स्वर्ग और नरक की बातें ईश्वर द्वारा बताया गया हैं। इसलिए यह पूर्णत; सत्य हैं। परन्तु उसके बारें में हम सब ने पूरी तरह से नहीं समझा, कह रहे हैं। ईश्वर के बताये स्वर्ग और नरक को मनुष्य निश्चित रुप से अनुभव कर रहा है परन्तु वें कहीं पर है कहना, भूल है।

मनुष्य को प्रलय के बाद समाधि से जगाकर, मरणोंपरान्तजीवन में स्वर्ग और नरक के रुप में(सुख-दुख के रुप में) धरती पर अनुभव करता है इस सत्य को मनुष्य जान नहीं सका, ऐसा हमारा मानना हैं। यदि जानकारी कर लें तो भविष्य में कोई प्रश्न न रहेगा। इतना ही नहीं मेरा मानना है कि ईश्वर का कहा भंग हुए बिना पूरा होकर रहता है।

हदीस ज्ञानी :- ऐसी बात नहीं है। स्वर्गलोक तथा नरकलोक है, पर ये धरती पर नहीं हैं। मनुष्य के कर्मों के अनुसार उसे स्वर्ग या नरक भेजा जाता है। प्रलयकाल में अल्लाह मनुष्य के सारे गलतियों का लेखा-जोखा कर फैसला कर स्वर्ग तथा नरक भेजते हैं। तबतक मृत व्यक्ति को समाधि में ही रहना पड़ता है।

मैं :- आप के कहे अनुसार एक मनुष्य मृत्यु के पश्चात् प्रलयकाल तक समाधि में ही रहकर प्रलयकाल में अल्लाह द्वारा समाधि से शरीर के साथ जगवाकर स्वर्ग और नरक भेजा जाता है यदि ऐसा माना जाय तो, जो व्यक्ति अपनी पूरी जिन्दगी जीने के बाद मृत्यु को प्राप्त होता है उस व्यक्ति का आपकेबताये अनुसार हो सकता है। यदि पैदा हुआ व्यक्ति पूरी जिन्दगी जीने से पूर्व ही उसकी चार सालों में ही मृत्यु हो जाती है, या एक महीने में मरने वाले छोटे-छोटे बच्चे हैं, या भरी जवानी में बिना विवाह के अनेक लोग मर जाते हैं। साल भर का बच्चा हो, या एक महीने का बच्चा हो लेखा-जोखा करने के लिए उसके कर्म नहीं होते हैं। क्या उन्हें प्रलयकाल में समाधि से जगाकर स्वर्ग तथा नरक में भेजा जायेगा? इस प्रश्न का जवाब शायद किसी के पास नहीं होगा। इतना ही नहीं मरण के पश्चात् स्वर्ग, नरक की कथा से हटकर प्रस्तुत जीवन में एक साल का बच्चा भयंकर रोग से पीड़ित होता है। नरक कहाँ और कैसे होगा हमलोगों ने देखा नहीं किन्तु सालभर का बच्चा रोग को अनुभव करना, प्रत्यक्ष नरक नजर आता है। इसे देखने के बाद महसूस होता है क्या यह नरक नहीं है।

www.thraithashakam.org

अगर किसी को भी सजा मिलती है तो इसका तात्पर्य है उसने गुनाह(पाप) किया था। माना कि एक वर्ष का बच्चा दो वर्षों तक रोग से पीड़ा का अनुभव करते हुए मर गया। उसने अपने जीवन में न ही अच्छा कार्य किया, न ही बुरा कार्य किया। वैसे लोगों को अल्लाह प्रलयकाल में जगाकर उस पर कैसे विचार करेगा। क्या उसे स्वर्ग भेजेगा? या नरक में भेजेगा? शायद इसका भी कोई जवाब नहीं होगा। रोग से पीड़ित छोटा बालक दीनता से देखता हुआ रोकर कहता है कि क्या मेरी रक्षा करनेवाला कोई नही हैं, बगल मे खड़े होकर देखनेवाले का हृदय रो पड़ेगा, इस बालक ने ऐसा क्या गुनाह किया जो इसे ऐसी बीमारी ने आ घेरी। अल्लाह को अनन्त दयालु कहा करते हैं, पैदा होने से लेकर कोई पाप न करनेवाला बच्चा रोग से तडप रहा है, माता-पिता अल्लाह से अपने बेटे को निरोग करने के लिए कितनी ही प्रार्थना करते हैं, अल्लाह उस बच्चे पर अपने अनन्त करुणा से थोड़ी करुणा दिखा सकता है न ! कितने ही दुष्ट लोग खुले आम गलत कार्य करते हुए आराम से जी रहे हैं उन्हें सजा दें या न दें कोई परवाह नहीं है। परन्तु छोटे से बच्चे की रक्षा करनी चाहिए न ! ऐसा लोग कहेंगें, आप बड़े हैं इस विषय में जाननेवाले बड़े आपका क्या कहना हैं।

हदीस ज्ञानी :- अल्लाह ने, उस बालक के माता-पिता अल्लाह के मार्ग में कितने हैं परखने के लिए था, कह सकते हैं। अन्फाल सुर; 28 वाँ आयत के अनुसार " जान रखो को तुम्हारे माल और तुम्हारी औलाद सब फितना है अल्लाह के पास बड़ा सवाब है " इस आयत के अनुसार अल्लाह ने माता-पिता को परखने निमित्त बच्चों को रोग दे सकते हैं। बच्चे के रोग से माता-पिता की कैसी प्रतिक्रिया रहेगी उसकी जानकारी होगी। बच्चे को रोग आना माता-पिता के लिए आजमाइश निमित्त ही है अन्यथा नहीं।

मैं :- आजमाईश नामक शब्द अन्फाल सुर; के अलावा अलबकरा सुर; में 155 वाँ आयत में भी दिया गया है। "जरुर हम तुम्हें आजमायेंगें कुछ डर और भूख से, और कुछ मालों और जानों, और कमाई की कमीं से" ऐसा दिया गया है। यहाँ जो कहा सब सच हैं। मेरा कहना है कि कब किस पर आजमाइश होगी इस विषय में समझने में गलतफहमी हुई होगी। पवित्र क़ुरआन में दैव संदेश वाक्यों शासनबद्ध, होना अनिवार्य है। क़ुरआन अल्लाह का शास्त्र है। यह बेशक सत्य है। मुझे दुख हो रहा है कि इन्सानों ने सही नहीं समझा। यह सब कहने का मेरा मुख्य उद्देश्य है कि अल्लाह के वाक्य का वास्तविक अर्थ समझें अन्यथा नहीं। हर व्यक्ति अल्लाह का निकट हो सकता है, माया से दूर होने का प्रयत्न ही इस रचना का सारांश है।

मेरा विचार है कि अब हमारे कहे भावों को ध्यान से सुनकर समझ सकेंगें। परमात्मा समस्त सर्व की सृष्टि करनेवाला सृष्टिकर्ता है। उनसे अनजान इस जग में कुछ भी नहीं हैं। परमात्मा सर्वत्र व्याप्त होकर सब देख सकता है। हर मनुष्य के अन्दर कौन सा गुण है, उसका बाहर कौन सा धन है सब कुछ उनको(परमात्मा को) ज्ञात है। मनुष्य पैदा होने से पूर्व कैसा पैदा होगा, कैसा बड़ा होगा, किस प्रकार से घुमेगा, किस प्रकार से अनुभव करेगा, किस प्रकार से वृद्ध होगा, किस प्रकार से मृत्यु होगी निर्णय कर लिखित कर्म को परमात्मा मनुष्य के साथ भेजता है **। कर्म आचरणपत्र के बिना पैदा होना नमुमकिन है। इसे ही नियति भी कहते है।**

इस बारें में पवित्र क़ुरआन ग्रंथ में सुर; इनफ़िंतार 82 आयत 5वाँ "हर जान, जान लेगी जो उसने आगे भेजा और जो पीछे।" सुर; मुतफ़्फ़फ़ीन 83 आयत 7,8, में "बेशक काफिरों की लिखत सबसे नीची जगह सिज्जीन में हैं। और तू क्या जाने सिज्जीन कैसी है यह एक पुस्तक है।" तथा सुर; इन्शिक़ाक़ 84 आयत 10 वाँ में "जिसका नामए आमाल (कर्म या आचरण

पत्र) उसकी पीठ पीछे दिया जाए" दिया गया। आचरणपत्र अर्थात् कार्य की निर्णय सूचिका। आचरण पत्र अर्थात् पापों की निर्णय सूचिका या पापों की लिखत सूचिका कह सकते हैं। आचरण अर्थात् कार्य सब जानते हैं। मनुष्य का आचरणपत्र मनुष्य के पैदा से पूर्व ही तैयार रहता है इसे सुर; अ-स-स 80 आयत 20,21,22 में "अल्लाह उसका वीर्य के बूंद से पैदा फरमाया फिर उसके भाग्य का निर्णय किया, फिर उसे रास्ता आसान किया। फिर मौत दी फिर कब्र में पहुँचाया" दिया गया। मनुष्य का मौत आने से पूर्व, उसे समाधि में पहुँचाने से पूर्व अल्लाह उसके जीवन के विधान का निर्णय करते हैं सूचित होता है। ईश्वर को मनुष्य का हर आचरण ज्ञात रहता है। प्रपंच में मनुष्य ने क्या किया, क्या कर रहा है, क्या करनेवाला है हर विषय उन्हें(ईश्वर को) ज्ञात रहता है। परन्तु उनका विषय कोई नहीं जानता है। इसी विषय पर भगवद् गीता विज्ञानयोग में 26 श्लोक में

वेदाहं समतीतानि वर्तमानानि चार्जुन,
भविष्याणि च मां तु वेद न कश्चन ।।

भावार्थ :- " हे अर्जुन ! जो पूर्व में हो चुके हैं उन प्राणियों को एवं जो वर्तमान हैं और जो भविष्य में होनेवाले हैं उन सब भूतों को मैं जानता हूँ परन्तु कोई मुझे नहीं जानता है।" इस प्रकार परमात्मा से अनजान कुछ भी नहीं है। एक मनुष्य पैदा होने से लेकर मृत्यु होने तक प्रपंच में क्या कर रहा है, क्या करनेवाला है, परमात्मा को पूर्व ही मालूम रहता है फिर उस व्यक्ति को परखने की आवश्यकता नहीं होती है। एक विद्यार्थी ने पढ़ाई को कहाँ तक समझा जानने हेतु उसकी परीक्षा ली जाती है, उसके प्रश्नों के उत्तर को देखकर ज्ञात होता है कि उसने क्या सीखा है। जैसे-; दूध में जल की मिलावट को जानने हेतु एक उपकरण द्वारा जाँचकर दूध की मात्रा, तथा पानी की मात्रा की जानकारी होती हैं। किसी

www.traitashram.org

विषय में जानकारी न होने पर जाँचने की आवश्यकता पड़ती है। जानकारी होने पर जाँचने की आवश्यकता नहीं पड़ती है। एक मनुष्य का विधान, मनोभाव, गुणभाव मालूम हो तो उसे बिना परखे ही वो इस प्रकार का व्यक्ति है कह सकते हैं। वैसे ही एक मनुष्य का कर्म लिखत, कार्याचरण, गुणस्वभाव की पूर्णत; जानकारी रहने पर परमात्मा को, मनुष्य को आजमाने की आवश्यकता नहीं होती है।

परन्तु क़ुरआन में सुर; बकरा, सुर; अन्फाल में आजमाइश होना लिखा गया है न कोई भी सवाल कर सकते हैं। इसका समाधान इस प्रकार से है ! मनुष्य के जीवन में हर चीज पहले ही कर्म लिखत में रहता है बताये थे न ! वे सब परमात्मा को ज्ञात होता है ये भी बताये थे। इसलिए इन सब को आजमाने की आवश्यकता नहीं होती है कहे थे। मनुष्य के जीवन में कर्मपत्र में एक लिखित विषय होता है। उस कर्मपत्र से परे परमात्मा का ज्ञान होता है। परमात्मा का ज्ञान मनुष्य के श्रद्धा के अनुसार, जानकारी करने की उत्सुकता के अनुसार लब्ध होता है। यह जीवन में निर्णीत नहीं रहता है। ज्ञान को सम्पूर्ण रुप से अर्जितकर आचरण करनेवाले को मोक्ष लब्ध होता है। मोक्ष का अर्थ स्वर्ग नहीं होता है, सर्व नरकों से परे परमात्मा का सन्निधान को मोक्ष कहते हैं। यही मोक्ष के बारें में क़ुरआन में सुर; अअ्ला 87 आयत 17,18 में "परलोक सर्वोत्तम तथा शाश्वत है। यही कथन पूर्व ग्रंथों में भी लिखा हुआ है।" स्वर्ग तथा नरक अशाश्वत हैं। वें पाप और पुण्य के अनुसार आते जाते रहते हैं। एक परलोक ही सबसे उत्तम एवं शाश्वत हैं। दैव सन्निधान परलोक(मोक्ष) मनुष्य को लब्ध होना है तो उसे एक स्थान तक ऊँचा उठना होगा। उस स्थान पर पहँचनेवाला परलोक जाता है। जो उस स्थान तक पहुँच नहीं पाता स्वर्ग और नरक में जाता है। ज्ञान मार्ग में उस स्थान को स्वयं मनुष्य को अर्जित करना पड़ता है। प्रपंच विषयों की तरह ज्ञान निर्णीत

नहीं होती है। मनुष्य कितना ज्ञान अर्जित करने से मोक्ष की प्राप्ति होगी यह विषय उसके साथवाले व्यक्ति को मालूम होना चाहिए अर्थात् मनुष्य को ज्ञान के विषय में बेशक आजमाना पड़ता है। आजमाना सिर्फ ज्ञान के विषय में जरुरत होती है, वह भी बराबर के व्यक्ति को मोक्ष के लिए कितना ज्ञान स्थान की आवश्यकता होगी मालूम करने के लिए, मनुष्य की आजमाइश होती है, इन आजमाइशों को भी क़ुरआन ग्रंथ में लिखा हुआ है जानिए।

मुख्यरुप से गौर करनेवाली बात यह है कि परमात्मा का ज्ञान को माया के कार्य(कर्म के आचरण) रुकावटें भरी तथा विरुद्ध होती है। दैवज्ञान की ओर जानेवाले को जीवन में माया कर्म के सारे कार्य रुकावटें बनकर ज्ञान मार्ग में अवरोध डालती है। उस अवरोध को पार करना ही ज्ञान मार्ग के व्यक्तियों के लिए इम्तिहान जैसा हैं। परमात्मा पर मात्र विश्वास करने से ही, दैवज्ञान पर ध्यान होने मात्र से ही कोई भी कर्माचरण से बच नहीं सकता है। वैसे व्यक्तियों के लिए कर्म के सारे कार्य इम्तिहान की तरह होते हैं जानिए। इसी विषय में पवित्र क़ुरआन ग्रंथ में सुर; अन्कबूत 29 आयत 2 वाँ में "क्या लोग इस घमंड में हैं कि इतनी बात पर छोड़ दिये जायेंगें कि हमें यकीन है और उनकी आजमाइश न होगी " कहा गया। इसके अनुसार अल्लाह पर यकीन व्यक्तियों को, उनके कर्म ही आजमाइश के लिए डटे रहेंगें सूचित होता है। कर्म या कर्माचरण मनुष्य जीवन में आने से पूर्व ही निर्णीत रहती है क़ुरआन में वाक्यों द्वारा जानकारी मिलती है। एक मनुष्य के लिए, उस मनुष्य की समस्याएँ हो, उनकी पत्नी की समस्याएँ हो, या उनके बेटों की समस्याएँ हो, जायदाद से संबंधित हो जीवन की पूरी समस्याएँ अल्लाह के मार्ग में विघ्न डालती है। इन सब को पार करना ही मनुष्य के लिए इम्तिहान है। इसे पार न करनेवाला ज्ञान परीक्षा मेंअसफल व्यक्ति है। इन सब को पार करनेवाला ज्ञान परीक्षा में

सफल व्यक्ति है। इस प्रकार सफल व्यक्ति मोक्ष प्राप्त करता है। यही अल्लाह का बहुत बड़ा प्रतिफल है। इसे सुर; अन्फाल आयत 28 में वास्तव में" जान रखो कि तुम्हारे माल और तुम्हारी औलाद सब फितना है अल्लाह के पास बड़ा सवाब है, जानना चाहिए "। ऐसा दिया गया है।

एक मनुष्य के चारों तरफ की सारी समस्याएँ इम्तिहान कहलाती हैं। वे सारी समस्याएँ कर्म से आते हैं। घर में पत्नी को रोग हो जाय तो वह पत्नी के कर्म के अनुसार होता है अलावा इसके पति का इम्तिहान लेने के लिए पत्नी को अल्लाह ने दर्द नहीं दिया मालूम रहे। वैसे ही घर में बेटे को भयंकर लाइलाज बीमारी लगी हो तो, वह उस बालक का कर्मलिखत के अनुसार आया होगा। किन्तु पिता को आजमाने के लिए उनके बेटे को रोग लगा सोचना नहीं चाहिए। वैसे ही सारी समस्याएँ उनके अपने कर्मों के अनुसार आये हैं। यें सब दैवमार्ग में अनुसंधान के रुप में परिवर्तन होंगें इस सत्य को ग्रहण करना चाहिए। ऐसा न होकर पिता को आजमाने के लिए अल्लाह ने बेटे को दर्द दिया हो, पति का शोधन करने के लिए पत्नी को खतरों में डाला हो, तो वह दुष्टों का कार्य होता हैं। तीव्रवादियों ने अमेरिका पर शत्रुता से अमेरिकी नागरिक को मारने जैसा होगा। पड़ोसी विरोधी हो तो उसके मासूम बेटे को मारने जैसा होगा। अन्याय, अमानवीय कार्य होंगें। अन्याय, अवैद्ध कार्यों को अल्लाह करता है कहना गुनाह होगा। उनके अपने कर्म उनके लिए इम्तिहान हैं, अल्लाह किसी को भी प्रत्येक रुप से इम्तिहान नहीं लेते है। किसी को आजमाने के लिए उनके बेटे को हो, पत्नी का हिंसा के लिए, रोगों के लिए, खतरों में नहीं डालता है। अल्लाह ऐसे कार्य कभी नहीं करेगा। उन्हे आवश्यकता ही नहीं है। कर्म के अनुसार आनेवाले कष्टों को बर्दाशकर सहनशीलता से दैवमार्ग में प्रयाण करनेवाला व्यक्ति को अत्यन्त उन्नत, अति उत्तम, शाश्वत परलोक(मुक्ति) लब्ध होता है।

www.thraithashakam.org

परमात्मा के मार्ग में चल रहे व्यक्ति को, परमात्मा के अलावा अन्य देवताओं पर ध्यान न रहनेवाले व्यक्ति पर परमात्मा, प्रपंच की समस्याएँ हो, अनारोग्य होने के मूल को नहीं हटाएगा, लेकिन दैवमार्ग से भटकने नहीं देगा। यही विषय, "लोग यह न सोचें कि अल्लाह पर यकीन करने पर आजमाइश न होगी" अन्कबूत में कहा गया, भगवद् गीता में "राजविद्या राजगुह्य योग " अध्याय में 22 श्लोक में इस प्रकार से है।

अनन्याश्चिन्तयन्तो मां ये जना; पर्युपासते
तेषां नित्याभियुक्ताना योगक्षेमं वहाम्यहम्

भावार्थ :– "अन्य देवताओं का चिन्तन किए बिना जो निरन्तर मेरी उपासना करते हुए मेरे ही ध्यान करते हैं उन ज्ञानियों का योग-क्षेम मैं चलाता हूँ।" कहा। इसके अनुसार परमात्मा से श्रेष्ठ कोई नहीं है, बिना किसी देवता की भक्ति किये निरन्तर ईश्वर की आराधना करनेवाले की, उसकी समस्याओं से ईश्वर रक्षा करता है, और वह समस्याओं से हार कर दैवमार्ग से न भटक सके उनके विश्वास(योग) को ताकत देकर रक्षा करता है सूचित हो रहा है। क़ुरआन मे, तथा भगवद् गीता में कहा गया दोनों में एक ही बात कही गयी है ग्रहण कर सकते हैं। ईश्वर ने कहीं नहीं कहा कि मुझ पर विश्वास, ज्ञान, योग रहने मात्र से ही समस्याएँ और रुकावटें(आजमाइश) नहीं रहेंगी। परन्तु अन्फाल सुर; में अल्लाह के पास बहुत बड़ा(सवाब) प्रतिफल है कहने जैसा ही, गीता में भी ईश्वर प्रतिफल के रुप में योग-क्षेम मैं वहन करता हूँ सूचित किया।

ईश्वर ने धरती पर मानवों का सृजन कर जीवन देकर उसी में स्वर्ग और नरक भी दिया। मनुष्य के लिए स्वर्ग और नरक के मध्य जीवन यापन करना, स्वर्ग और नरक कर्मों की वजह से (पाप-पुण्य की वजह से) पाने की व्यवस्था ईश्वर ने कर रखी है। सृष्टि के आदि में ही ईश्वर ने

मनुष्य जीवन कैसे गुजारेगा निर्णय कर, महा प्रलय तक उसी पद्धति से चलते रहने के लिए यन्त्रों की व्यवस्था कर रखी है। ईश्वर ने मनुष्य महाप्रलय तक जीवन गुजारे, मनुष्य धारण किया गया शरीर मरण से नष्ट होकर, पुन; नवीन शरीर(जिसे समाधि कहते है) जो सभी के लिए समान रुप से लब्ध होता है, उस नये शरीर के साथ मरण के बाद फिर से जीवन जीने के लिए उस शरीर से (समाधि से) ईश्वर जगाता है। इस प्रकार से पहले समाधि से जागनेवाला जीव जीवन में स्वर्ग और नर्क को भोगते हुए कुछ समय के पश्चात् शरीर को बदलने हेतु मरण को प्राप्त हो जाता है। मरण प्राप्ति के पश्चात् जीव को पुन; नये शरीर में जगवाया जाना सामान्यत; होता रहता है। शरीर बदलने हेतु मृत व्यक्ति पुन; नग्न ही तैयार होकर, बिना किसी गुण ध्यान के नये शरीर में पैदा होता है। (इस विषय में अधिक जानकारी चाहिए तो हमारी रचनाएँ जनन- मरण का सिद्धान्त नामक ग्रन्थ पढ़िए।) नया बना शरीर को समाधि कहते हैं। सबका मानना हैं कि जीव माता के गर्भ से पैदा होता है। परन्तु अबतक कोई भी व्यक्ति माता के गर्भ से पैदा नहीं हुआ है। माता के गर्भ में पूर्णत; तैयार शरीर ही प्रसवित होने के बाद उसमें जीव का प्रवेश होता है। माता के गर्भ से शिशुशरीर पैदा होता है, जीवात्मा नहीं। जीवात्मा, प्रसवित हुआ नये शरीर में जब प्रवेश करता है उस शरीर को समाधि कह सकते हैं। जब तक जीवात्मा का प्रवेश शिशुशरीर के अन्दर नहीं होता वह शरीर समाधि नहीं कहलायेगा। पहले श्वास से ही जीव का प्रवेश होता है। जीव अन्दर प्रवेश करने पर सबसे पहले उसे उस शरीर से जगवाया जाता है। जीव मरण प्राप्त क्षण ही उस जीव के पाप-पुण्यों का अनुसरण करते हुए मरण के बाद जीवन, उसमें अनुभव करनेवाले स्वर्ग और नरकों का निर्णय हो जाता हैं। क्षण काल में ही जीव प्रसवित होकर नये शरीर में प्रवेश करता है। उस शरीर के अन्दर से अपने शरीर पर बिना किसी ध्यान के जगवाया जाता है। जब जीव का मरण होता है उस पुराने शरीर को छोड़कर नये शरीर में प्रवेश करना,

मरण के बाद जीवन के लिए कर्म(प्रारब्ध कर्म) निर्णीत होना, नये शरीर से (समाधि से) जगवाना यह पूरा क्षणकाल में हो जाता है। अबतक यह हर किसी के लिए अनजान रहस्य है। सर्वाधिकारी परमात्मा के द्वारा ही यह रहस्य हम सब को मालूम पड़ा समझना चाहिए। इस विषय को सत्य का अन्वेषण बुद्धि से देखना चाहिए। यह बिलकुल सत्य है इसलिए अंतत; हर कोई ग्रहण कर सकता है।

यह सब बताने की वजह समाधि का वास्तविक रुप समझने के लिए समझना चाहिए। समाधि का वास्तविक रुप समझ में आ जाय तो ईश्वर का बताया ज्ञान कांतिमय हो जायेगा। यह बेजोड़ ज्ञान हो जायेगा। ईश्वर के कथन के आगे कोई प्रश्न न रहेगा। जहाँ प्रश्न न हो वही परमात्मा का ज्ञान है। परमात्मा का ज्ञान सम्पूर्ण रुप से जानकर उसके अनुसार आचरणकर प्रपंच के समस्याओं से निडर व्यक्ति परमात्मा का सन्निधान परलोक(मोक्ष) की प्राप्ति करता है। वैसे लोगों को न जीवन की आवश्यकता हैं, न ही समाधि की आवश्यकता हैं। क्योंकि उनका मरण के बाद जीवन नहीं होता है। कोई भी जीव परलोक पहँचने तक जीवन के अन्त में मरण प्राप्त करने के बाद दूसरा शरीर धारण करता रहता है। अर्थात् मरण के बाद जीवन पाता रहता है। वैसे लोग बिना पूर्ण मरण प्राप्त किये दोनों के मध्य में जीवन में ही रहते हैं। जीवन में सर्वदा सुख-दुख के अलावा कुछ नहीं रहता है। इस वजह जीवन को नरकाग्नि कहा जाता है। नरकाग्नि को(जीवन कहा जाता है) पानेवाला परलोक को न पाकर किसी एक शरीर में, कोई एक जीवन गुजारता है। वो न मरे बिना रहता है, न पैदा हुए बिना रहता है। उसे मरना ही होगा, उसे पैदा होना ही होगा। यही विषय सुर; अअ्ला 87 आयत 12 वाँ में वो सबसे बड़ी आग में जायेगा, "वो न उसमें मरे, और न जिये" कहा गया। ऐसे लोग शरीरों को बदलते रहने के बावजुद वो नित्य नरक में रहने के बराबर है। परलोक के

अलावा इहलोक में रहने वाले को हर नया शरीर समाधि ही होगा। उसका शरीर जब-जब प्रलय को पाता है उसे शरीर समाधि से जगवाया जाता है।

आज के लोगों को यह सब पढ़कर, सुनकर नया महसूस हो सकता हैं लेकिन यह बिलकुल सत्य है। यह सब सौ प्रतिशत सत्य है शरीर समाधि से मनुष्य मरण के बाद जब जागना, शरीर में वास जीव बिना किसी ध्यान की वजह से, अभी हमने जो कहा उस विषय पर सत्य, और असत्य के बारें में योचना आ सकती है। इस विषय में माया(शैतान)पहले ही लोगों को राह में भटकाने की वजह से, हमारी बातों पर विश्वास करना सबके लिए मुश्किल होगा। हमारी बातों पर बल देने के लिए, सबलोग योचना करने हेतु मौके के रुप में ईश्वर ने समाधि से मनुष्य को प्रतिदिन बाहर निकालने की व्यवस्था कर रखी है। इसके द्वारा सत्य और असत्य ग्रहण करने हेतु, ईश्वर का कहना शासन होता है समझ में आयेगा। वह कैसे अर्थात् ! मनुष्य मरण को पाना सबकी नजर में प्रत्यक्ष सत्य है, पैदा होना भी प्रत्यक्ष रुप से होता ही है, मरण और जनन प्रत्यक्ष प्रमाण होते हुए भी, मरण और जनन में क्या हो रहा होता है उसका अनुभव किसी को नहीं है। इस विषय में सामान्य लोग ही नहीं बल्कि भौतिक विषयों, शरीर के भाग, रोग की जानकारी रखनेवाले डॉक्टर भी अनजान हैं कह सकते हैं। इन बातों का अभी विवरण करना मुश्किल है। इस विषय में हमारे "जनन मरण का सिद्धान्त" नामक ग्रंथ में विस्तार से लिखा गया है। मरना हो या पैदा होने में मनुष्य को कुछ ध्यान में नहीं रहता है, इस वजह बाद में बताने के लिए, उस समय में याद न रहने की वजह से, सब लोगों के लिए ये दोनों विषय अगम्य गोचर हैं। हलांकि परमात्मा ने मनुष्य को सोच कर जानकारी करने के लिए उन नमूने को मनुष्य में व्यवस्था कर रखी है। **मरण और जनन के नमूने, प्रति नित्य घटनाओं के रुप में संभावित निद्रा और जागना।**

जो समझदार है, जो समझदार नहीं है, मेधावी, मुर्ख सब के लिए प्रतिदिन नींद आना मनुष्य के आधीन में नहीं है। कब आता है, कैसे आता है, नींद आने से अनुभव कैसा होता है कोई नहीं बतला सकता है। मनुष्य के पैदा में क्या होता होगा, जीव शरीर में कब प्रवेश करता है, कैसे प्रवेश करता है, कैसे जगाया जाता है, किसके द्वारा जगाया जाता है किसी को नहीं मालूम है। वैसे ही प्रतिदिन निद्रा से जागना के बारें में भी मनुष्य के पास पूरी जानकारी नहीं है। निद्रा में बैठा हुआ जीव प्रपंच ध्यान में कैसे आ पाता है ? कौन जगाता है ? इन सब विषयों में पूरी जानकारी किसी को नहीं है। वास्तव में मरना, पैदा होना नमूने के रुप में निद्रा और जागना परमात्मा ने कर रखा है। मरना और पैदा होना अत्यन्त रहस्यमयी हैं। इन सबकी जानकारी मानव को होना हो तो इस नमूने को देखकर जानकारी प्राप्त करनी होगी। **इसलिए मरना, पैदा होना के रहस्यों को जानने के लिए परमात्मा ने प्रत्यक्ष प्रमाण के रुप में कर रखा है। इस विधान में मरण निद्रा जैसी होती है,और पैदा होना जागने जैसी होती है।**

सबसे पहले निद्रा के बारें में विवरण करेंगें। निद्रा से सब सुपरिचित हैं ही। फिर भी कोई भी व्यक्ति नीदं कब आयेगी उस समय को नहीं बता पाता है। नित्य मनुष्य को नींद आती रहती है कोई भी मेधावी निश्चित समय बता नहीं सकता। कोई भी शोध कर ले, कितना ही बड़ा शोधक क्यों न हो, निद्रा आ रही है जानकर, किस समय में आती है कोई नहीं बता सकता। निद्रा आने के समय में शरीर में पहले क्या हुआ, बाद में क्या होता है किसी को नहीं मालूम है। निद्रा समय में शरीर में कौन से परिवर्तन होते रहते हैं अन्तत; मनुष्य को नींद कैसे आती है यदि जान जाय तो, मनुष्य मरण समय में शरीर में क्या हो रहा होता है, क्या होने के बाद मनुष्य मरण को प्राप्त करता है जान जायेंगें। वैसे ही निद्रा से जागकर मनुष्य में क्या हो रहा होता है, वह व्यक्ति कैसे जाग पा रहा है

यदि जानकारी कर सके तो उस नमूना में ही जनन मालूम पड़ जायेगा। कई लोग सोच सकते हैं निद्रा और जागने का विषय जानना आसान हैं। इसलिए वेमन योगी ने" निद्रा के मर्म को जाननेवाला सच्चा योगी होता है" कहा। कुछ लोगों का कहना हैं मैं ही सोता हूँ, मैं ही जागता हूँ। ऐसा कोई भी भ्रम में पड़ सकता है। किन्तु नींद और जागने में कोई भी स्वतंत्र नहीं है। अबतक मरना, पैदा होने का नमूना निद्रा, जागना का विषय ही अत्यन्त रहस्यमयी था, उससे भी बड़ा रहस्य मरना, पैदा होने का विषय में किसी को नहीं मालूम कह सकते हैं।

किसी को जानकारी नहीं हैं कह रहे हैं तो फिर तुम्हे कैसे मालूम पड़ा आप मुझसे सवाल कर सकते हैं। मुझे मालूम है मैंने अबतक कभी नहीं कहा। मैंने कईबार कहा कि अत्यन्त रहस्यमयी जनन-मरण मुझे नही, बल्कि मेरे साथी को सब मालूम है। प्रतिदिन मनुष्य को नींद में ले जानेवाला तथा जगानेवाला मेरे शरीर में ही विराजमान है। उनसे अनजान कोई रहस्य नहीं है। मैंने उनसे दोस्ती की इस वजह उन्होंने मुझे सूचित किया है और मैं आप सब को सूचित कर रहा हूँ। अत; कोई भी ज्ञानबोध बताते समय हो, या कोई भी ज्ञानबोध लिखते समय हो, "हमारा कहना है, तथा हम इस प्रकार लिख रहे हैं" कहकर लिखते हैं। मेरा ही नहीं बल्कि आपका साथी भी, आपके शरीर का अधिपति बनकर रहनेवाला सभी के शरीरों में भी स्थित है। हलांकि उनका शरीर में स्थित रहना, वे ही शरीर के अधिकारी होना, उन्ही से सभी कार्य होते रहते है, मनुष्य अनजान रह जाने के कारण, शरीर के अन्दर मैं की भावना प्रबल होने की वजह से तुम्हारे अन्दर में स्थित साथी तुम्हे कुछ नहीं सूचित कर रहा है। इसलिय तुम्हे कुछ भी जानकारी नहीं है। तुझमें और मुझमें सिर्फ इतना ही भेद है। उस भेद की वजह से ही मैं बता पा रहा हूँ, आप बता नहीं पा रहे हैं।

निद्रा से कैसे जागते हैं यदि जान पाए तो, समाधि से कैसे जागते हैं जान पायेंगें। नींद में व्यक्ति शरीर से स्वयं जाग नहीं पाता है। वैसे ही मृत व्यक्ति भी स्वयं(समाधि) से जाग नहीं पाता है। जैसे नींद में व्यक्ति को सोते हुए शरीर से जगाया जाता है, वैसे ही मृत व्यक्ति को माता के गर्भ से बाहर निकले शरीर से जगाया जाता है। नींद में व्यक्ति को, एवं मृत व्यक्ति को किसी की जानकारी के बिना शरीर के अन्दर वास आत्मा द्वारा जगाया जाता है। नींद में व्यक्ति के लिए उनका पुराना शरीर ही समाधि होता है, मृत व्यक्ति के लिए उनका निवास करनेवाला नया शरीर ही समाधि होता है। शरीर में ही सो रहा व्यक्ति को उस शरीर में स्थित जीवात्मा का साथी आत्मा ही शरीर से जगाती है। यहाँ कुछ एक सवाल पुछ सकते हैं जो इस प्रकार से है ! नया शरीर पैदा होते समय के बारें में तो हमें मालूम नहीं हैं। परन्तु नींद में व्यक्ति को जब हम जगाते हैं तब वह जाग जाता है। नींद में व्यक्ति को दूसरा व्यक्ति जगाता है, इस बारें में सब जानते हैं आप कहते हैं कि नींद में व्यक्ति को, उनके शरीर में वास आत्मा जगाती है। आपका कहना एकदम झूठ है ! ऐसा सवाल कर सकते हैं। अगर मेरी बात झूठ होता तो आपके इस प्रश्न का जवाब न देकर टाल जाता। मेरी बात झूठ नहीं है। इसलिए आपके बिना पुछे ही इस प्रश्न को मैंने ही उठाया शायद कोई भी ऐसा सवाल कर सकता है कह कर मैंने प्रश्न किया। इसका जवाब भी देंगें। यहाँ प्रश्न और जवाब दोनों मेरे ही हैं फिर भी, प्रश्न आपके पक्ष में, जवाब देने का पक्ष मेरा है।

नींद में व्यक्ति को जब कोई जगाता है और वह व्यक्ति जाग जाए, बाहर से देखने में उस व्यक्ति को जगाना और उसका जागना नजर आता है, लेकिन शरीर के अन्दर वास आत्मा ही जगाती है। आत्मा होने का आभास बाहर मनुष्य ग्रहण कर सके, बाहर से व्यक्ति जब पुकारता है तो आत्मा शरीर के अन्दर जीव को जगाती है। नींद में जीव को बाहरी ध्वनि हो, बाहरी स्पर्श हो मालूम नहीं पड़ता है। जिस प्रकार से बहरे व्यक्ति को

पुकारा जाय तो उसे कुछ भी सुनाई नहीं पड़ता है, वैसे ही थपथपाने पर भी, वह स्पर्श उनको(जीव) मालूम नहीं पड़ता है। ऐसे में नींद में व्यक्ति को कोई पुकारे, थपकी दे तो उसके उठने की गुंजाइश नहीं है। फिर नींद में व्यक्ति को जब कोई पुकारता है, जो आत्मज्ञान नहीं जानते हैं उनके लिए आत्मा मालूम होना धर्म विरुद्ध होगा, आत्मा से अनजान रहें, इसलिए आत्मा ही नींद में व्यक्ति को जगाकर, बाहरी व्यक्ति सोचे मैंने जगाया भ्रम में ड़ाल देती है। एकबार जगाने पर भी नींद से न जागनेवाले व्यक्ति भी होते हैं। वैसे ही थपकी देने पर भी कुछ लोग जाग नहीं पाते हैं। शरीर के लिए अधिपति, उस शरीर के अन्दर आत्मा ही है इसलिए आत्मा का प्रमेय के बिना कुछ नहीं हो सकता है। आत्मा शरीर में रहकर मनुष्य के इच्छानुसार शरीर को कई कार्यों में चलवाते हुए, शरीर का मैं ही अधिपति हूँ उस शरीर के अन्दर जीव को भ्रमित करती है। कुछ ऐसे कार्यों को जीव के इच्छा का अनुसरण करते हुए आत्मा करवाने की वजह से, मनुष्य मेरा शरीर मेरी मर्जी कहता रहता है। उस(जीव) को शरीर पर कोई अधिकार न होने पर भी मनुष्य अपनी इच्छा के आधीन में होकर होनेवाले इच्छावाले कार्यों को देखकर मनुष्य मेरी मर्जी कह रहा है। मनुष्य को भ्रमित कर इच्छावाले कार्य ही नहीं बल्कि, मनुष्य का प्रमेय न होने पर भी, मनुष्य के इच्छा के बिना, मनुष्य के जानकारी के बिना अनेक कार्य होते रहते हैं। इसके बावजुद मनुष्य अपनी अज्ञानता से उन हो रहे कार्यों के बारें में योचना ही नहीं करता है। हमारे शरीर के अन्दर बिना इच्छावाले अनेक कार्य हैं। हाथ, पैरों को मनुष्य की मर्जी के अनुसार ही आत्मा कार्य करवाने की वजह से, वह कार्य उसकी मर्जी के अनुसार हो रहा है सोचकर, मैं ही कर रहा हूँ मनुष्य अपनी अज्ञानता से सोच रहा है। कभी-कभी मनुष्य के हाथ, पैर मनुष्य की मर्जी से कार्य नहीं करते हैं। और तब मनुष्य हाथ, पैरों को जरा भी हिला नहीं पाता है। सब अंग सलामत रहें केवल पैर ही कार्य न करें तो उसे कोई रोग हुआ मान लेता है इसके

अलावा, मूल कारण के बारें में योचना ही नहीं करता है। शरीर में अनेक छुपे हुए रहस्यों को, पूर्ण आध्यात्मिकता(आत्मा का पूर्ण अध्ययन) शरीर के अन्दर ही है मनुष्य अनजान रह जाने की वजह से प्रवक्ताओं के बताये ज्ञान को शरीर में देखने के बजाए बाह्य प्रपंच में देख रहा है। इस वजह से ज्ञान समझ में न आ सका कह सकते हैं।

भगवद् गीता में ज्ञान हो, या बाइबल में वाक्यों हो, या क़ुरआन में आयतें हो, उसमें से कुछ को अंतरंग में ही देखने की आवश्यकता है। बाह्य जीवन के विधानों को बड़े-बुजुर्गों ने बताया उन सब को बाह्य प्रपंच में ही समझकर आचरण करना चाहिए। वे सारे नीति-न्याय से सम्बंधित विषय होते हैं। शरीर के अन्दर जीव का विधान यदि बताये तो उसे शरीर के अन्दर विषय समझकर आचरण करना चाहिए। अंतरंग में समझकर आचरण करने वाले सारे ज्ञान और धर्म होते हैं। **प्रपंच संबंधित नीति और न्याय से बढ़कर परमात्मा ज्ञान और धर्मों कई गुना उत्तम हैं।** अतएव दैवज्ञान, दैवधर्मों को अंतरंग में अवगाहन कर लेने से जीव के लिए समाधि शरीर में होता है, शरीर के लिए समाधि(कब्र) बाह्य प्रपंच में होता है। प्रवक्ताओं के बताये सारे ज्ञान चैतन्ययुक्त जीवात्मा के बारें में ही था, चैतन्यरहित जड़ शरीर के बारें में नहीं था। अतएव जीवात्मा वास शरीर(समाधि) के बारें में ही बतलाना चाहिए। जीवात्मारहित शरीर (शव) के बारें में बतलाना नहीं चाहिए।

अबतक प्रवक्ताओं द्वारा कहे समाधि विषयों को विस्तार से बताया गया। ऐसे बहुत सारे विषय हैं जिनके बारें में उन्होंने नहीं बताया। प्रवक्ताओं के बतलाने के अलावा कई और ज्ञान के विषय पवित्र बाइबल ग्रंथ में योहन्ना सुसमाचार 16 वाँ अध्याय में 12 वचन में इस प्रकार से है "मुझे तुम से और भी बहुत सी बातें कहनी हैं, परन्तु अभी तुम उन्हें सह नहीं सकते" ऐसा यीशु ने कहा था। इतना ही नहीं इसी बाइबल ग्रंथ में,

योहन्ना सुसमाचार 14 वाँ अध्याय 26 वाक्य में "सहायक(आदरणकर्ता) अर्थात् पवित्र आत्मा जिसे पिता मेरे नाम से भेजेगा, वह तुम्हें सब बातें सिखाएगा, और जो कुछ मैं ने तुम से कहा है, **समस्त** तुम्हें स्मरण कराएगा।" ऐसा प्रवक्ता यीशु ने कहा। इस वाक्य से पता चलता है कि प्रवक्ता ने ज्ञान के कुछ ही विषयों को बताया, बताने के लिए बहुत सारे विषय थें, सारे विषयों को बताना ही समस्त का बोध कराना होता है, सूचित हो रहा है। अबतक अनेक प्रवक्ता आए और गए, ऐसे अनेक ज्ञान के विषय आधार सहित हैं जिन्हें अबतक प्रस्तव में नहीं लाया गया। मैं प्रवक्ता नहीं हूँ फिर भी जहाँ तक मुझे मालूम है, अबतक प्रस्तव में जो नहीं आये हैं, प्रवक्ताओं के बताये विषयों में से एक या उससे ज्यादा को मेरे अन्दर की आत्मा ने पहुँचाया उसे हम आप को सूचित करना चाहते हैं।

अबतक हमने समाधि विषय में प्रवक्ताओं ने जो बताया था उसे विस्तार से बताया। यह एक अजूबा, और अविश्वसनीय विवरण नजर आ सकता है। फिर भी हेतुबद्धता से योचना की जाय तो हमने जो कहा वह सत्य है किसी को भी समझ में आयेगा। मुझे पसन्द है अगर कोई व्यक्ति कहता है तो उसके दो अर्थ निकलते हैं। वह व्यक्ति मुझे पसन्द है कह सकता है, या मुझे दुख हुआ कह सकता है। एक वाक्य के जब दो अर्थ निकलते हैं तो संदर्भानुसार वहाँ कौन सा अर्थ सही होगा पहचान करना चाहिए। वहाँ संदर्भ के अनुसार हो, या गुजर रहा समय हो या बिना पहचाने पसन्द आया शब्द को मात्र ही देखने से दुख; हुआ ही समझ में आयेगा। यदि समय संदर्भ के अनुसार देखते हैं तो एक व्यक्ति जब लड़की देखने जाता है तो उस संदर्भ में सबके समक्ष देखते समय पसन्द है कहकर हामी देता है, तो उस हामी को दुख हुआ समझा जाय तो वह असंदर्भ समझ आयेगा। पसन्द है बात का अर्थ दुख हुआ उस समय उस अर्थ का कोई काम नहीं। मूल ग्रंथ में जब प्रवक्ताओं ने, प्रलय में कहा,

वह कौन सा प्रलय है ठीक से समझ में न आए तो वहाँ सारे भाव गलत निकलेगें। प्रकृति चर और अचर दो प्रकृतियाँ में हैं, दोनों प्रकृतियाँ का प्रलय हो सकता हैं बताया जाता है, तो किस प्रकृति के बारें में बताया गया? किस प्रलय के बारें में बताया गया यदि योचना न की जाय तो गलत भाव होने की गुंजइश बनी रहती है। पवित्र कुरआन ग्रंथ में हजरत मोहम्मद प्रवक्ता के बताये ज्ञान के विषय में पहले कुछ लोग गलत भाव से समझने की वजह से, उनके द्वारा वही अर्थ चारों ओर फैल जाने की वजह से, प्रवक्ता ने किस उद्देश्य से कहा वह उद्देश्य या भाव किसी को भी मालूम न हो सका। इसलिए दैवसन्देश का असली सारांश, बाद में आये लोगों में ग्रहण करने की गुंजाइश नहीं रही।

बाइबल ग्रंथ में योहन्ना सुसमाचार में 16 अध्याय में 12 वाँ वचन के अनुसार परमेश्वर के अनेक वाक्य हैं जिन्हें प्रवक्ता बतलानेवाले थे, मालूम पड़ा उन्हें बताया नहीं गया। वजह उन्हीं वाक्यों में परन्तु अभी तुम उन्हें सह नहीं सकते लिखा गया है। वैसा कहने की वजह लोग पहले से ही गलत भाव में डुबे हुए थें, सच बताने पर भी लोग उन विषयों को समझ न सकेंगें सोचकर नहीं बताया गया सूचित होता है। इस प्रकार के अनेक ज्ञान के विषय हैं उसमें से हमने हमारे ग्रंथों में कुछ ही विषयों पर विवरण दिया है। अब हम एक ज्ञान के विषय में बताएगें जिनके बारें में किसी ने भी अबतक नहीं बताया। ज्ञान का विषय नया होने के कारण, भिज्ञ सत्य कुछ ही लोगों को आनन्द देगा, कुछ लोगों में असूय उत्पन्न कर सकता है, सुना हुआ विषय है यीशु प्रभु ने बताया था, उन्हें सहन न हो सकेगा। असूय गुण को अनदेखा करने से हमारे बताये ज्ञान विषय अनेक प्रश्नों का जवाब होगा और आनन्द देगा। परमात्मा से संबंधित समस्त विषयों का परिशीलन करना चाहिए। कौए के घोसला में कोयल के अंड़े को जिस प्रकार से कोई भी पहचान नहीं सकता है, उस अंड़े को कौआ का अंडा ही कहते हैं कोयल का अंडा कोई नहीं कह सकता

क्योंकि कौए के घोसले में कौए के ही अंड़े रहते हैं। उसी प्रकार से माया अपने धर्मों को कोई पहचान न सकें परमात्मा के धर्मों में शामिल कर देती है, लोगों को जो उनकी जानकारी के धर्मों में से कौन सा दैवधर्म है, कौन सा माया धर्म है पहचान न पाना अपनी जानकारी के धर्मों को परमात्मा धर्म मान बैठा है। कुछ लोगों को परमात्मा धर्म माया धर्म के रुप में, माया धर्म परमात्मा धर्म के रुप में नजर आता हैं। कुछ लोगों में माया धर्म अच्छी तरह से रच बस गया है। वैसे लोग में हमारे बताये दैवधर्म उन्हें नया नजर आ सकता है और असूय की भावना उत्पन्न होकर असहनशील बना देता है।

कोई कुछ भी कहें, जो जिस प्रकार समझना चाहे समझें हम(मैं + मेरी आत्मा) अनिवार्य रुप से सत्य का ही बोध करते रहेंगें। किसी भी मजहब में हो परमात्मा के वाक्यों के भाव में यदि त्रुटियाँ आ जाय उसमें सुधार करना और उसका वास्तविक भाव बताना हमारा कर्तव्य है। अतएव हम हिन्दू(इन्दू)मत के अलावा ईसाई, इस्लाम मजहब में भी दैवसंदेशों में भावत्रुटियाँ न हो, और यदि आ जाये तो उनके असली भाव को सूचित करने का प्रयत्न करते हैं। इसी प्रयत्न में ही समाधि का विवरण दिया गया। प्रकृति से बना शरीर के साथ परमात्मा भाग आत्मा और जीवात्मा मिल कर सजीव शरीर को समाधि कहते हैं बताया गया। प्रपंच में पैदा हुए सभी प्राणीयों को शरीर प्राप्त करवानेवाली प्रकृति माता जैसी है, शरीर में चेतना शक्ति देनेवाला परमात्मा पिता जैसा होता है यह भी बताया गया। पहले आप समझने के लिए प्रकृति माता जैसी, परमात्मा पिता जैसा पहले बताया गया जन्म-जन्मान्तर तक असली माता-पिता प्रकृति परमात्मा ही हैं इसी विषय में भगवद् गीता गुणत्रय योग अध्याय में 3,4 श्लोक में

मम योनिर्महद्ब्रम्ह तस्मिन्गार्भंदधाम्यहम्।
संभव सर्वभूतानां ततो भवति भारत ।।

सर्वयोनिषु कौन्तेय मूर्तय; संभवन्ति या; ।
तासां ब्रम्ह महद्योनिरहं बीजप्रद : पिता ।।

भावार्थ :- अचेतन प्रकृति मेरी पत्नी जैसी है। उसका मैं पति के रुप में, बीजदाता के रुप में हूँ। अत; हम दोनों से समस्त प्राणी पैदा होते हैं। बाह्य प्रपंच में किस योनि से(किस गर्भ से) किसी भी आकार से पैदा हो। समस्त प्राणीयों को शरीर देनेवाली माता प्रकृति होगी, और उन सबका बीजदाता मैं(ईश्वर)ही हूँ समझना चाहिए।

अब असल विषय की चर्चा करेंगें। प्रकृति द्वारा शरीर उत्पन्न होता है। ईश्वर प्रकृति को बीज देता है। अतएव माता प्रकृति, पिता परमात्मा हैं ज्ञात हुआ। इसे मनुष्यों ने नहीं कहा, यह परमात्मा का संदेश है। फिर अब एक प्रश्न उठता है। जो इस प्रकार है! इस बीच सालभर पहले नये शादी-शुदा जोड़े को अभी-अभी बेटा हुआ। उस बच्चे के पिता ने "मेरे बेटे का नामकरण है आप सब आकर आर्शीवाद दीजिएगा" निमंत्रणपत्र छपवाकर भेजा। उनका कहना था मेरे बेटे का नामकरण पर आइए। यहाँ भगवद् गीता में परमात्मा ने कहा, किसी का भी पुत्र मेरा पुत्र है। सच क्या है योचना की जाय तो, जैसे;- हम सब देखते रहते हैं विवाह के बाद पति अपने पत्नी साथ घर बसाता है और उन दोनों से पुत्र पैदा होता है। यानि पैदा करनेवाले पति, पत्नी ये ही हैं। इन दोनों ने विवाह किया दांपत्य जीवन बीताया, संतान को पैदा किया प्रत्यक्ष रुप से हम सब देखते हैं। किसी भी पत्नी और पति से पैदा हुए बेटे को, मेरा(परमात्मा) बेटा है कहना, क्या परमात्मा के लिए न्याय है ? ऐसा कोई भी पुछ सकता है। इसका जवाब हमें ही देना होगा ! बता रहे हैं सुनिये। जब कोई किसी के बेटे को बेटा कहकर पुकारता है, जबकि वह उसका बेटा नहीं है। चाहे प्यार से हो या गुस्से से बेटा कहता है। इसका मतलब यह नहीं कि वे ही उस बच्चे के माता, पिता हैं। कोई भी व्यक्ति किसी

भी दंपति के बेटे को बेटा कहना क्या न्याय संगत है यदि पुछा जाय तो यह न्याय नहीं है, वैसा कहना सही नहीं है कह सकते हैं। जब कोई एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति के बेटे को बेटा कहे, तो वो गलत होता है। परमात्मा के लिए भी, पति पत्नी से पैदा हुआ शिशु को मेरा बेटा कहना गलत ही होता है, ऐसा कोई भी कह सकता है। यदि दैव धर्मों के अनुसार देखें तो न्याय-अन्याय, नीति-अवनीति प्रपंच में जीवन जीनेवालों पर मात्र पर ही अमल में आता है। परमात्मा पर नीति, न्याय अमल नहीं होता है। उन पर केवल ज्ञान और धर्म ही अमल होता है। तो फिर दूसरों से पैदा हुए बच्चे को परमात्मा मेरा बेटा कहना क्या यह ज्ञान है? या क्या यह धर्म है? कहकर पुछ सकते हैं। लेकिन नीति, न्याय कहकर प्रश्न नहीं करना चाहिए। भगवद् गीता में परमात्मा ने कहा, सबकी माता प्रकृति, और पिता मैं हूँ कहना क्या यह धर्म होता है? पुछ सकते हैं।

धरती पर कोई भी किसी से पैदा हुआ हो उसका पिता मैं ही हूँ कहना, देखने में अधर्म नजर आता है वास्तव में यह धर्म ही है। मेरा मानना है परमात्मा का वचन धर्मबद्ध होता है, कोई भी मुझे असत्यवादी कहे या मेरे बारें कोई भी राय बना ले कोई परवाह नहीं है। परन्तु धर्मबद्ध रुप से परमात्मा हर मनुष्य, हर प्राणी के लिए पिता ही है कह सकते हैं। बाइबल में मत्ती सुसमाचार 9 वाँ वाक्य में "पृथ्वी पर किसी को अपना न पिता कहना, क्योंकि तुम्हारा पिता एक ही है, जो परलोक में है।" यीशु ने स्वयं इस वचन को कहा था। बाइबल में यीशु प्रवक्ता ने कहा, भगवद् गीता में सबका बीजदाता पिता मैं ही हूँ दोनों ग्रंथों में एक ही जैसा दिया गया है। प्रत्यक्ष माता-पिता सामाजिक जीवन में नजर आनेवाले माता-पिता हैं आध्यात्मिक विधान में हर जन्म में माता-पिता अप्रत्यक्ष होते हैं। प्रत्यक्ष माता-पिता प्रस्तुत जन्म के ही माता-पिता हैं, प्रकृति, परमात्मा सारे जन्मों के, सबके माता-पिता हैं। प्रकृति, परमात्मा असल माता-पिता हैं सुननेवाले कई लोगों में किसी भी प्रकार का कोई भी स्पंदन, या नया विषय जानकर

बिना आश्चर्य हुए कहनेवालों की ओर दया से देखते हैं। और उसकी की मानसिक स्थिीति ठीक नहीं सोचकर उसकी बातों पर ध्यान नहीं देते हैं। क्योंकि ! उस बात को असत्य, तथा बतानेवाले को पागल समझकर दया से देखते हैं। और कुछ लोग प्रकृति, परमात्मा को इन्सान मानकर, शायद उनलोगों ने पैदा कर इनको दिया होगा और ये हमारा पालन- पोषण कर रहे हैं माना जा रहा है। कई वैज्ञानिकों ने विज्ञान का शोधन के अनुसार पिता के वीर्यकण, तथा माता के अंड से मनुष्य का जन्म होता है, क्या बिना कण और अंड से बच्चे पैदा हो सकते है कहकर हँसी उड़ाते हैं। मूल ग्रंथों में बताए परमात्मा के वचनो को लोग सुनने की स्थिीति में नहीं हैं। इसे अन्ध-विश्वास, तथा बुद्धिहीनता कहा देते हैं।

कोई कुछ भी सोचें, कुछ भी कहें वास्तव में प्रकृति द्वारा शरीर, परमात्मा द्वारा संचलन शक्ति, और जीव की व्यवस्था होने की वजह से प्रकृति माता, परमात्मा पिता हैं, यह शास्त्रसम्मत, धर्मयुक्त है। कल्पना करके बातें करना अलग बात, शास्त्रबद्धता से बातें करना अलग बात है। उदाहरण के लिए अष्टदशा(18) पुरान कल्पनाकर बताया गया। वें शास्त्र नहीं हैं, कई झूठ, कई सच को पिरोकर पुरान बताया गया। शास्त्र वैसे नहीं हैं। शास्त्र हमेशा सत्य स्वरुपयुक्त, शाश्वत, अपरिवर्तनीय हैं। पृथ्वी पर षठ शास्त्र हैं। उसमें से सर्वोत्तम सबसे पहला ब्रम्हविद्याशास्त्र है। पहला ब्रम्हविद्याशास्त्र को पंक्तिक्रम में अन्त में बताया गया। बाद में आये अन्य पाँच शास्त्रों को पंक्तिक्रम में आगे बताया जा रहा है। षठ शास्त्र इस प्रकार से हैं। 1) गणित शास्त्र 2) खगोल शास्त्र 3) रसायन शास्त्र 4) भौतिक शास्त्र 5) ज्योतिष शास्त्र 6) ब्रम्हविद्या शास्त्र। ब्रम्हविद्या शास्त्र को योग शास्त्र भी कहते हैं। मनुष्य का जनन-मरण, कर्म का विधान, आत्मा का अध्ययन, जीवात्मा की अनुभूतियाँ सारे ब्रम्हविद्या से ही संबंध रखते हैं। जो आध्यात्मिकता से संबंधित सभी शास्त्रबद्ध होते हैं। अगर

कोई भी जो विषय आध्यात्मिक नहीं हैं उसे आध्यात्मिक कहा जाय तो वह न सत्य है, और न ही उसमें शास्त्रबद्धता होती हैं। कई जगहों में दैवाज्ञान के विषयों में मायाज्ञान भी शामिल हो जाता है और किसी के पहचान में नहीं आता है ब्रम्हविद्या शास्त्र के ज्ञाता, अशास्त्रबद्ध माया ज्ञान को तुरन्त पहचान कर लेते हैं। इसी विधान से दैव संदेशों के मूल ग्रंथों में जैसे कौए के घोसले में कोयल के अंड़े एक जैसा दिखते हैं, चोर की तरह माया ज्ञान को पहचानकर बाहर निकाला जा सकता है। हमारे रचित "**त्रैत सिद्धान्त भगवद् गीता** " में मायाज्ञान श्लोकों को हटाकर लिखा गया।

ब्रम्हविद्या शास्त्र के अनुसार एक जीव के लिए माता प्रकृति, पिता परमात्मा कहना शासन तथा वास्तव है। हम सब देखते रहते हैं सबलोग, प्रत्यक्ष माता-पिता से ही पैदा होते हैं। परन्तु प्रकृति, परमात्मा से पैदा होना कहीं भी देखाई नहीं पड़ता है ऐसा प्रश्न हो सकता है। इस प्रश्न का समाधान देने से पहले एक उदाहरण बताते हैं। हमने 1980 वाँ वर्ष में" जनन-मरण का सिद्धान्त " एक संचलनात्मक ग्रंथ की रचना की। वह सारे ग्रंथों की तरह साधारण ग्रंथ नहीं है। सबके लिए अनजान रहस्य, मरना और पैदा होना विषयों का सैद्धान्तिक रुप से लिखा गया ग्रंथ है। उस एक ग्रंथ को लिखने के लिए 45 दिन लगें। उस ग्रंथ को लिखने के लिए बहुत योचना करने की आवश्यकता पड़ी। अनेक सबूतों को इकट्ठा करना पड़ा। 45 दिनों तक परिश्रम करने के बाद एक प्रति तैयार कर पाये थे। और अंतत; "जनन-मरण का सिद्धान्त "एक पूर्ण ग्रंथ तैयार हुआ। बाद में उस प्रकार के ग्रंथों को कई हजार संख्या में तैयार करने के लिए, पहला रचयिता द्वारा लिखा गया ग्रंथ का नमूना तैयार कर उससे अनेक जनन-मरण का सिद्धान्त ग्रंथों को तैयार किया जा सकता है। एकबार लिखने के बाद वैसे ही परिश्रम अन्य उसी प्रकार के ग्रंथों को लिखने की आवश्यकता नहीं है। पहला ग्रंथ का नमूना तैयार कर, उस नमूने के अनुसार 45 दिनों

में 45 हजार ग्रंथों (कापियों) को तैयार कर सकते हैं। यहाँ पहला ग्रंथ लिखा गया था, बाद में उसके नमूने से तैयार सारे ग्रंथ, ग्रंथों हो गए। लिखा हुआ ग्रंथ में विषय ही तैयार किया गया ग्रंथों में वही विषय होने के बावजुद पहला लिखा ग्रंथ ही मूल ग्रंथ होता है, बाद में उसके अनुसार उसी के जैसे तैयार अनेक होते हैं, वें सारे उसके नमूने से तैयार हुए हैं मूल ग्रंथ नहीं हो सकते हैं। बाद में तैयार हजारों की संख्या में तैयार जनन-मरण का सिद्धान्त नामक ग्रंथ के रचयिता पहले लिखे व्यक्ति का हमारा नाम ही रहेगा। मैंने एक ही ग्रंथ को लिखा था। अन्य उस प्रकार के ग्रंथों को पहला ग्रंथ के जैसे मेहनत करने की आवश्यकता नहीं पड़ी। 45 दिनों में एक ही ग्रंथ को लिखा गया, अब 45 दिनों में हजारों ग्रंथ तैयार होते हैं। बाद तैयार सारों को बिना लिखे हमारे लिखे नमूने से ग्रंथों तैयार होने की वजह से उन सब पर रचयिता हमारा नाम ही लिखा गया। रचयिता यदि एक ग्रंथ लिखे, बाद में बिना लिखे उसी नमूने से तैयार सारे ग्रंथों पर वही रचयिता का नाम लिखा जाता है। पहला लिखा गया पुस्तक से बाद में अनेक पुस्तक बनाये जाते हैं। पहला लिखा पुस्तक को पुस्तक कहा जाता है बाद में तैयार पुस्तकों को पुस्तकें कहते हैं। पुस्तक और पुस्तकों में एक ही समाचार होता है, और एक ही लेखक का नाम रहता है। यें सब एक होते हुए भी पहले को लिखा गया, बाद में तैयार हुआ, कहा जाता है। यह विषय पूरा, आगे बताया जानेवाला विषय समझ में आने हेतु केवल उदाहरण हेतु बताया गया।

अब असल विषय की चर्चा करते हैं। कोई भी प्राणी या कोई भी मनुष्य हो जन्म एक ही बार प्राप्त करता है। इस विषय में हमने **"पुर्नजन्म का रहस्य"** नामक ग्रंथ में बताया। हर मनुष्य का जन्म सृष्टि के आदि में ही हुआ। सृष्टि के आदि में एकबार जन्म होने के बाद बाद में पुन; किसी का जन्म नहीं होता है। परन्तु शरीर बदलने हेतु पुर्नजन्म हर मनुष्य कई वर्षों में एकबार प्राप्त करता है। इसी के अनुसार अब हम सब ने पुर्नजन्म

प्राप्त किया कह सकते हैं। हम सबका जन्म सृष्टि के आदि में ही हो चुका। सृष्टि आदि में तुम्हारा जन्म होना तुम्हे स्मरण नहीं है। क्यों कि आप असली जन्म को भूल चुके हैं। पुर्नजन्म के लिए प्रत्यक्ष माता-पिता की आवश्यकता होती है। किन्तु जन्म को प्राप्त करने के लिए अर्थात् सृष्टि के आदि में प्रत्यक्ष माता-पिता नहीं थे। तुम और तुम्हारे अभी के माता-पिता सब सृष्टि आदि में परमात्मा द्वारा सृजन हुए थे। सृष्टि के आदि में प्रकृति को गर्भ के रुप में लेकर परमात्मा ने मनुष्य के सृष्टि करने हेतु माता के अंड़ से, पिता के वीर्य के बिना सृष्टि की। परमात्मा ने सृष्टि से पहले ही सृष्टि की रचना की। पहले ही सृष्टि कैसे होनी चाहिए निर्णय लिया, जिस प्रकार से एक रचयिता ग्रंथ को लिखता है उसी प्रकार से परमात्मा ने अपनी सृष्टि की रचना(बनाया) की। जैसे कि पहला पुस्तक तैयार करने के लिए प्रींटिंग प्रेस की आवश्यकता नहीं पड़ती, वैसे ही प्रथम मानवों की सृष्टि करने के लिए मानव संबंधित अंड़, और पिंड़ की आवश्यकता नहीं पड़ती है। पहला लिखा गया पुस्तक के नमूने (प्लेटस) का अनुसरण कर अनेकों पुस्तकों को, कितने बार भी तैयार किया जा सकता है। उसी तरह से परमात्मा ने स्वयं तैयार किये गये नमूने का अनुसरण कर माता, पिता संयुक्त यंत्रों द्वारा अनेकों मानवों को अनेकोंबार पैदा करवा रहा है। **सृष्टि के आदि में प्रकृति और पुरुष से बना मनुष्य का जन्म होता है, बाद में प्रकृति और पुरुष के स्थान में स्त्री और पुरुष माता–पिता के रुप में होते हैंनये शरीर से पैदा होना पुर्नजन्म हो**ता **है।** पुर्नजन्म शरीर बदलने के लिए अनेकों होते रहते हैं। पुर्नजन्म कितने भी हो उस समय नये शरीर में जीव प्रवेश करता है। परन्तु जीव सृष्टि के आदि से एक ही जैसा है। एक ही नाम का पुस्तक को जितने बार भी नया छापा जाता है, उसका न ही नाम बदलता है, और न ही उसमें लिखे विषय बदलते हैं। लेकिन कागज बदल जाता है। पुराने कागज के स्थान पर नया कागज आता है। उसी तरह से मनुष्य अनेकों बार पैदा होता है, उस मनुष्य का शरीर नया

होता है। परन्तु मनुष्य के अन्दर जीव सृष्टि के आदि से जैसा था वैसा ही रहता है, उनके वही गुण होते हैं। पुस्तक को जितनी बार भी नया छापा जाय, उसके रचयिता पहलेवाला ही रहते है, उसी तरह से मनुष्य जितनी बार भी पुर्नजन्म लें, पहले सृष्टि करनेवाला ही उसका सृष्टिकर्ता या सृजनहार है। पुस्तक बनने के बाद जितना समय भी हो, जिस प्रकार उसके रचयिता नहीं बदलते है मनुष्य जितनी बार भी शरीर को बदलने के लिए पैदा होता है, उसकी सृष्टि हुए जितना समय भी हुआ हो, उसको पहले पैदा करनेवाला पिता नहीं बदलता है। अत; सृष्टि के आदि में तुम्हें पैदा करनेवाले को ही पिता कहना पड़ा।

प्रस्तुतकाल में प्रत्यक्ष माता-पिता जिरॉक्स मशीन(छपाई मशीन) की तरह हैं, समझना चाहिए। जब एक पुस्तक पुरानी हो जाय छपाई मशीन में छपने से वो मशीन उसे सृष्टि नहीं करती है, उस पुस्तक में लिखें गए विषयों को नये कागज पर फिर से मुद्रित करती है, वैसे ही जब एक शरीर पुराना हो जाय माता, पिता जैसे यंत्र द्वारा पुन; जीव नये शरीर के साथ पैदा होता है, इसके अलावा प्रस्तुत प्रत्यक्ष माता, पिता ने उसकी सृष्टि नहीं की। जब पुस्तक को छापा जाता है लेखक के नाम के स्थान पर छपाई मशीन का नाम न छाप कर लेखक का नाम छापा जाता है, उसी प्रकार से प्रत्यक्ष माता, पिता से पैदा होना वह जन्म नहीं पुर्नजन्म है। इसलिए पहला जन्मदाता परमात्मा का नाम ही पिता के स्थान पर लिया गया। इस प्रकार से सृष्टि के आदि से सबके जन्मदाता, बीजदाता परमात्मा ही पिता होते हैं। अतएव बाइबल में मत्ती सुसमाचार 23 वाँ अध्याय में 9 वाँ वाक्य में" पृथ्वी पर किसी को भी पिता न कहना, क्योंकि तुम्हारा एक ही पिता है, जो परलोक में है।" कहना पूर्णत; सत्य है। और भगवद् गीता गुणत्रय विभाग योग अध्याय में 3,4 श्लोक में सर्व प्राणियों का बीजदाता मैं पिता हूँ कहना भी पूर्णत; सत्य है। मालूम पड़ गया है कि पिता परमात्मा, माता प्रकृति हैं। बाद में पुर्नजन्म में प्रत्यक्ष माता, पिता उस जन्म

के छपाई मशीन की तरह माता, पिता हैं असली सृष्टि उनके द्वारा नहीं हुई है। अतएव बाइबल में पिता कहकर नाम रखना किसी को पुकारना अतिश्योक्ति न होगी।

मनुष्य का जन्म एकबार, पुर्नजन्म कितने होंगें, कह नहीं सकते हैं। मनुष्य का पिता एक ही है, पिता जैसे कितने होंगें कह नहीं सकते हैं। मनुष्य को सृष्टि के आदि में जन्म लेकर सृष्टि के अंत्य तक रहना ही पड़ेगा, मध्य में शरीर के मरण होते हैं जीव का नाश नहीं होता है। जीव का नाश मोक्ष से होता है। जीव को,मोक्ष की प्राप्ति होने तक पुर्नजन्म लेना ही पड़ता है। जो असल में माता, पिता नहीं होते हैं उन्हें माता, पिता की तरह देखना पड़ता है। मनुष्य को पैदा हुए कितने लाखों, करोड़ों वर्ष हुए कहना कठिन हैं। परन्तु शर्मिन्दगी की बात है कि मनुष्य को अबतक नहीं मालूम हुआ कि उनके असली माता, पिता कौन है ! उन्हें असली माता, पिता के बारें में न मालूम होना आश्चर्य ही है न ! बाह्य प्रपंच में कोई कितना ही बड़ा मेधावी, बड़ा उत्कृष्ठ, बड़ा विज्ञानी, बड़ा ही ताकतवर के रुप में व्यवहार करनेवाला मनुष्य उसे अपने माता, पिता पर ध्यान न हो तो, चाहे वह जिये या मरे, एक ही बात है। वेमन योगी ने, "**जिस पुत्र को माता, पिता पर दया न हो वो जीये या मरे, जैसे बिल में दीमक हो या न हो।**" वेमन के अनुसार प्रकृति, और पुरुष होते हैं, वे उनके माता, पिता हैं जो नहीं जानता है वो बिल में लगे दीमक के सामान होता है। वे हो या न हो उसके बारें में कोई नहीं सोचेगा। वैसा व्यक्ति रहे या न रहे एक ही है, यही योगी वेमन का कहने का तात्पर्य था।

सृष्टि के आदि में परमात्मा ने अपनी प्रकृति से शरीर को तैयार करवाकर, पाँच धातुओं से बना शरीर में उनका अंश जीवात्मा को प्रवेश करवाकर, सजीव शरीर तैयार किया। इस प्रकार से प्रथम तैयार हुए प्राणियों के जन्मों के बारें में हम लोगों ने जाना। सृष्टि से आरम्भ हुआ

जन्म अबतक चला आ रहा है। आगे भी रहेगा। मनुष्य को सृष्टि के आदि में जन्म लेने के बाद समाधि से जगावाया नहीं गया। पुर्नजन्म में मात्र ही समाधि यानि शरीर से जगवाया जाता है। पुर्नजन्म में माता के गर्भ से बाहर निकला शरीर के अन्दर, गत जन्म में शरीर से बाहर आया जीव के लिए, नये शरीर में प्रवेश करना ही समाधि होता है। सृष्टि के आदि में माता के गर्भ से शरीर निकलता नहीं है। और जीव भी दूसरे शरीर से प्रवेश नहीं करता है। अत; सृष्टि के आरम्भ में जन्म लेते समय में किसी की समाधि नहीं होती है**। समाधि पुर्नजन्म लेनेवालों के लिए ही मात्र होता है समझना चाहिए।** पुर्नजन्म में मात्र ही मनुष्य(जीव) समाधि से जगवाया जाना मूल ग्रंथों में कहा जाना सत्य है। मूल ग्रंथों में दिया गया है कि परमात्मा समाधि से जगाता है। यहाँ इस बात में मनुष्य थोड़ी संदिग्ध स्थिीति में पड़ सकता है। या प्रश्न का रुप ले सकता है। आप ने कहा परमात्मा रुप, नाम, क्रिया रहित है, तो फिर परमात्मा मनुष्य को समाधि से जगानेवाला कार्य कैसे कर सकता है? लिखा गया है कि परमात्मा समाधि से जगाता है। यहाँ इस बात में मनुष्य थोड़ी संदिग्ध स्थिीति में पड़ सकता है। या प्रश्न का रुप ले सकता है। इसका जवाब इस प्रकार से है ! हो सकता है परमात्मा ने सृष्टि से पूर्व कार्य किया हो। परन्तु सृष्टि के पश्चात् उनका नाम नहीं है, कार्य नहीं है, रुप नहीं है। उनके व्यवस्थित विधान का अनुसरण करते हुए, जिन्हें उन्होंने नियमित किया, वें उनके कार्य को करने की वजह से, उस कार्य को उन्होंने किया, कह रहे हैं। लेकिन उनके नियमित भूतों, महाभूतों, ग्रहों, उपग्रहों ऐसे अनेकों उनके कार्य को कर रहे हैं। परमात्मा ने कोई कार्य स्वयं नहीं किया।

पुर्नजन्म में नया पैदा हुआ शिशुशरीर में जीव को प्रवेश करवाकर, दोबारा उसमें से परमात्मा ने जगाया कहना, वह कार्य होने के लिए मूलकर्ता परमात्मा है, परन्तु उस पूरे कार्य को परमात्मा ने नहीं किया।

उस कार्य को करने के लिए, तथा जीव को जीवन भर चलवाने के लिए, कर्मों का अनुभव करवाने के लिए उसके अनुसार शरीर में उसका कार्य करने के लिए परमात्मा ने, अपने अंश से आत्मा को व्यवस्थित कर रखा है। परमात्मा द्वारा व्यवस्थित आत्मा अपनी भूमिका को सृष्टि के आदि से जीव के साथ शरीर में रहकर संचालन रही है। जो इस आत्मा को जो कोई भी जान सकेगा, वह ही परमात्मा को सुलभता से जान सकेगा। सृष्टि के आदि में ही पालन करने हेतु परमात्मा ने अनेक अपने सेवकों की व्यवस्था कर रखी थी, वें कौन हैं हम भी जानते नहीं हैं। परमात्मा द्वारा व्यवस्थित कार्यों को करने के लिए, प्रकृति संबंधित भूतों, ग्रहों को परमात्मा ने मनुष्य के साथ ही सृष्टि की, सबसे महान अत्यन्त शक्तिशाली आत्मा को भी मनुष्य के साथ ही सृष्टि के आदि में ही परमात्मा ने सृष्टि की। शरीर का अधिपति आत्मा को नियमित कर जीव को कर्म अनुभव करवाने के लिए नियुक्त किया। सृष्टि में **आत्मा का पात्र महान है। परमात्मा के बाद आत्मा ही महान है कह सकते हैं।** परमात्मा प्रकृति को उनके साथ के लिए सृष्टिकर बाद में प्रकृति के पाँच भाग किये। वैसे ही परमात्मा ने अपने आप को तीन भागों में विभाजित किया। प्रकृति, प्रकृति रहते हुए उससे पाँच भाग परमात्मा ने किये। वैसे ही परमात्मा, परमात्मा रहते हुए उनसे दो भाग हुए। प्रकृति से निकले पाँच भागों से शरीर बना, परमात्मा से निकले आत्मा, जीवात्मा दोनों शरीर में प्रवेश कर गए। इससे एक सजीव शरीर में प्रकृति के पाँच तथा परमात्मा के दो भाग होते हैं ज्ञात होता है।

यह शास्त्रबद्ध विषय है। अत; यह विषय पूर्णत; सत्य है। इस बात को हम कह रहे हैं हमारा महत्व न जाननेवाले विश्वास नहीं कर सकेंगें। जो शास्त्रबद्ध होता है उसका निरुपण होना चाहिए न ! ऐसा पुछ सकते हैं। इस प्रकार के प्रश्न उठ सकते हैं परमात्मा ने पहले ही इस ज्ञान का निरुपण होने के लिए हम सब के शरीर पर एक प्रकार का निशान को रख

छोड़ा है। शरीर पर सृष्टि के आदि में ही परमात्मा द्वारा रखा गया निशान प्रपंच विधान में कोई अर्थ नहीं देता है, परन्तु परमात्मा विधान में विशेष अर्थ देता है। उस निशान के विषय में जानने से पूर्व थोड़ा समाचार जान लेते हैं। सृष्टि के आरम्भ में ही प्रकृति संबंधित शरीर में परमात्मा संबंधित जीवात्मा, आत्माओं को परमात्मा ने व्यवस्थित कर रखा था। सृष्टि होने से पूर्व केवल परमात्मा मात्र ही थे। आज प्रत्यक्ष प्रकृति हो, या अप्रत्यक्ष जीवात्मा, आत्माएँ हो कुछ भी नहीं थें। प्रकृति में आकाश, वायु, अग्नि, जल और पृथ्वी ये भी नहीं थें। आकाश अर्थात् शून्य भी न होने की स्थीति कैसी होती होगी, किसी भी तरह से कल्पना करने के लिए भी संभव न होगा। वह स्थीति परमात्मा के अलावा किसी को भी मालूम न होगा। उस प्रकार की स्थीति से अचर प्रकृति बनी। उसके बाद चर प्रकृति बनी। तुरन्त जीवात्मा, आत्माएँ बनें। सृष्टि के आदि में दो प्रकृतियाँ, दो आत्माएँ तैयार होने के लिए क्षणभर समय ही लगा। उस एक ही क्षण में दैवसंकल्प से प्रकृति, प्रकृति संबंधित शरीरें बनीं, और तुरन्त परमात्मा संबंधित आत्मा, जीवात्माएँ तैयार हुईं।

सर्वप्रथम प्रकृति संबंधित तैयार हुए और उसी क्षण परमात्मा संबंधित तैयार हुए, यह सृष्टि के आदि में हुआ कार्य था जानने हेतु, उसी समय पहला पैदा हुआ शरीर पर प्रकृति, परमात्मा संबंधित अर्थपूर्ण निशान को परमात्मा ने मुद्रांकित किया। प्रपंच में निरर्थक वे मुद्राएँ, दैवज्ञान में अर्थपूर्ण होने के बावजुद उनके बारें में किसी ने योचना नहीं की। न ही इसके बारें में किसी ने जानने की कोशिश की। प्रपंच में अबतक हरएक के लिए अनजान वे मुद्राएँ हरेक के शरीर पर दायाँ, बायी तरफ एकएक भाग में एक-एक सब के नजर के सामने हैं। वे निशान चाहे अमेरिका में श्वेतजाति के लोग हो, या आफ्रिका के कालेजाति के लोग हो, कोई कहीं भी पैदा हुआ हो सबके शरीर पर मुद्रांकित हैं। एक लोहे के टुकड़े को अच्छी तरह से गर्म कर चर्म पर जलाने से जिस तरह से चर्म जलकर,

सिकुड़कर अलग नजर आता है वैसे ही निशान को परमात्मा ने चर्म पर मुद्रांकित किया। इस मुद्रा के विषय के बारें में अब तक किसी ने नहीं बताया, इसलिए हम आपको बताकर, उस समय प्रवक्ताओं ने बिना बताये छोड़े हुए में से एक को इस ग्रंथ में पिरो रहे हैं। परमात्मा के समस्त ज्ञानों में से यह एक नवीन ज्ञान है पहचानिए। प्रकृति, प्रकृति ही रहकर चराचर दो भागों में बँट गयीं बताये थे न ! प्रकृति दो भागों में होने की वजह से प्रकृति से तैयार शरीर प्रत्यक्ष रुप में दायाँ और बायाँ दो भागों में तैयार हुई। दायाँ , बायाँ भागों के रुप शरीर तैयार होकर, प्रकृति दो भागों में हैं, जानने के लिए किया गया। प्रकृति दो भागों में रहने के कारण प्रकृति से तैयार सारे गुण भी अच्छें-बुरें गुण भी दो भागों में तैयार हुए। गुण के दो भाग हैं, इसलिए आनेवाले कर्मों में पाप, पुण्य दो प्रकार के कर्म बनते हैं। कर्मों का दो प्रकार होना, उससे मनुष्य(जीवात्मा) के अनुभव भी सुख और दुख के रुप में दो भागों में बँट गए। इस प्रकार से एक स्थूलशरीर में, दायाँ और बायाँ दो भाग नजर आते हैं। और उस दायाँ और बायाँ ओर नजर आनेवाले शरीर पर विशाल और रिक्त वक्षस्थल के ऊपर परमात्मा ने जलाकर रखा गया मोहरों के जैसे ही दो मोहरें लगायी। उसे हम **छाती पर मोहर** कहते हैं। चित्र

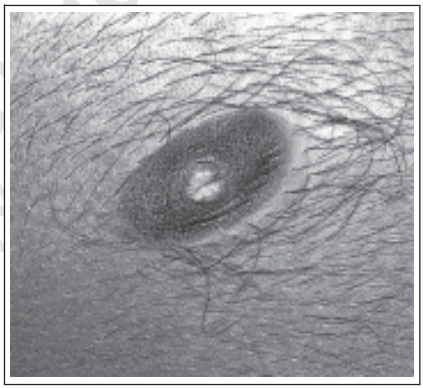

छाती पर मोहर

छाती पर मोहर परमात्मा ने लगाया। इसलिए सब लोगों के शरीर पर नजर आती है। मैं फलाँ मजहब का हूँ, फलाँ देश का वासी हूँ, फलाँ कुल का हूँ कहनेवाले सारे लोग पर एक ही प्रकार का मोहर(मुद्रा) सबके शरीर पर मुद्रांकित हैं। छाती पर मुद्रा के आकर को पहले पन्ने पर देख सकते हैं। जहाँ त्वचा जलने के और बाल उगे नहीं हैं जैसा छाती पर मोहर, जहाँ त्वचा जली हुई दिख रही है, उस त्वचा पर बालें भी उगी नहीं हैं। गोलाकार चर्म विशेष रुप से नजर आना और चर्म भी अलग ही नजर आ रहा है। अलग से नजर आनेवाला गोलाकार चर्म पर मध्य भाग में अरहरदाल के परिमाण में उठा हुआ एक निशान नजर आ रहा है। सामने से देखने पर पाणि मट्ट् के अन्दर शिवलिंग ऊपर से देखने पर नजर आता है। जला हुआ गोलाकार के रुप में अर्ध अंगुल से भी बड़ा आकार प्रकृति के निशान के रुप में, उस आकार के मध्य में अरहर दाल जितना उठा हुआ आकार परमात्मा के निशान के रुप में है। प्रकृति, और परमात्मा का याद दिलाते हुए, प्रकृति, परमात्मा की वजह से ही तुम पैदा हुए हो। तेरा शरीर का ही जन्म हुआ है जानने हेतु, इस निशान के अन्दर दो चिन्ह तुम्हारे माता, पिता के रुप में निशानियाँ दर्शा रही हैं। हर मनुष्य को माता यानि प्रकृति की वजह से, पिता यानि परमात्मा की वजह से पैदा होने का अर्थ समझाते हुए छाती पर मुद्रा(मोहर) याद दिला रही हैं। प्रकृति भाग को याद दिलाते हुए आधा अंगुल चौड़ा वृताकार के मध्य में ऊँचा एक आकार होने की वजह से, अध्यक्ष के रुप में परमात्मा रहना सूचित हो रहा है। इस प्रकार से छाती पर परमात्मा द्वारा लगाया गया मोहर आध्यात्मिक अर्थ देने के बावजुद भी, उसके बारें में किसी आध्यात्मिकवेत्ता ने ध्यान नहीं दिया। लेकिन अब हमारे इस बारें में जानकारी दिए जाने से परमात्मा के समस्त ज्ञानों में से एक ज्ञान की जानकारी हुई। इस मुद्रा के बारें में हरेक मुस्लिम, हरेक ईसाई, हरेक हिन्दू(इन्दू) को योचना करना चाहिए सूचित कर रहे हैं।

परमात्मा प्रपंच, तथा उसमें निवास प्राणियों की सृष्टि कर प्राणियों को जीने के लिए प्रक्रिया की व्यवस्था की। सृष्टि के आरम्भ में ही जीवों को, उसके कर्मों की सृष्टि करनेवाले परमात्मा ने, उस कर्म से खुद को बचाकर परमात्मा के पास पहुँचने का मार्ग भी सूचित किया। परमात्मा में पहुँचने के मार्ग को ज्ञान मार्ग कहते हैं। परमात्मा से संबंधित धर्मों को जानना ही ज्ञान होता है। मनुष्य की रचनाकर, उनका प्रपंच में जो करना है उसी के अनुसार जब कर्म निर्मित हो रहा था उससे सारे अनुबंधित भी तैयार हो गए थें। कर्म दो प्रकार के, उससे गुण भी दो प्रकार से बनें। वैसे ही अनुभव भी दो प्रकार के बनें। गुण के दो भाग हुए उससे संबंधित आचरण दो प्रकार के बनें। और अनुभव भी दो प्रकार के बनें। इसमें से जो गुण मनुष्य के शरीर में हैं, वे प्रकृति जनित हैं। जैसे शरीर प्रकृति की वजह से पैदा हुआ वैसे गुण भी प्रकृति की वजह से पैदा हुए हैं। प्रकृति द्वारा पैदा हुआ शरीर में मुख्य भूमिका गुणों की होती है। गुणों के कार्याचरण का सूत्र सारे गुण मिलकर माया नाम की एक विशेष शक्ति को शरीर में तैयार किया गया। परमात्मा द्वारा तैयार हुई माया नामक शक्ति को परमात्मा ने विशेष जिम्मेदारी सौंपी। वह जिम्मेदारी इस प्रकार से है! परमात्मा ने मनुष्य को कर्म से बचने के लिए उनके धर्मों को ज्ञान रुप में बताया था न ! मनुष्य को परमात्मा के धर्म की ओर न जाने से रोकना ही माया को सौंपा हुआ कार्य है। परमात्मा अर्थात् मुझे पसन्द व्यक्ति को मात्र ही बिना रुकावट डाले छोड़ दिया जाय, मुझे नापसन्द व्यक्ति को मेरी ओर न आने देना, माया को परमात्मा ने आज्ञा दी। यह विषय किसी को मालूम नहीं है। परमात्मा ने माया को सौंपी गयी जिम्मेदारी अत्यन्त गोपनीय है। इस वजह यह रहस्य ही रहा और किसी को मालूम न हो सका। सभी मतों(धर्मों) में माया को अलग-अलग नामों से पुकारा जाता है। हिन्दू(इन्दू)मत में माया, ईसाई और इस्लाम मतों में शैतान कहा जाता हैं। सभी को मालूम है कि माया, परमात्मा ज्ञान की विरोधी, तथा दैवमार्ग में रुकावटें डालती है।

माया दैवमार्ग की विरोधी है, और वह बहुत ही ताकतवर है, उसके आगे कोई भी कितना ही बड़ा क्यों न हो उसे ज्ञानमार्ग को छोड़कर अज्ञानमार्ग पर जाना ही पड़ता है, उस पर विजय पाना असंभव है, कई लोग कहते हैं। भगवद् गीता में भी "मम माया दुरत्यया " मेरी माया पर विजय पाना असंभव है कहा गया। कुछ लोगों का कहना है कि माया पर विजय पाना संभव नहीं है, लेकिन माया को इतना ताकत कहाँ से आया किसी ने नहीं सोचा। भगवद् गीता में परमात्मा ने स्वयं मम माया कहा। **मम माया** अर्थात् मेरी माया। उनकी(परमात्मा) माया उनके ही मार्ग में रुकावटें डालती है न ! उस प्रकार की माया को मेरी माया क्यों कहा जा रहा है ? ऐसा कोई भी प्रश्न पुछ सकता है। इसका जवाब इस प्रकार से है ! परमात्मा ने ही माया को बनाकर, माया को एक कार्य सौंपा। सृष्टि से अबतक माया परमात्मा के बताये कार्यों को श्रद्धा से कर रही है। **कई समयों में मात्र ही परमात्मा पर भक्ति का नाटक करनेवाले लोग बाद में प्रपंच विषयों में श्रद्धा रखनेवाले लोग परमात्मा के नापसन्द हैं। परमात्मा के नापसन्द को ग्रहणकर माया उसी कार्य में आगे बढ़ाती हुई उन्हें परमात्मा से दूर ले जाती है।** जो कोई भी परमात्मा के पसन्दीदा भक्ति श्रद्धा से बर्ताव करता हो, जो कोई भी अन्य देवता पर से ध्यान को हटाकर सबसे उत्तम परमात्मा को जानकर बर्ताव करता हो, वैसे लोगों के मार्ग में माया किसी भी प्रकार की रुकावटें नहीं डालेगी। थोड़ी देर परमात्मा को महान कहना, दैवज्ञान महान कहकर स्तुति कर, बाद में सभी से छुपाकर अन्य देवताओं की, जो आराधना करते हैं उन्हें किसी न किसी तरह से दूर कर देती है।

मनुष्य ऊपर से कैसा भी नजर आये, सच्चा दैवज्ञानी होने का नाटक भले ही कर ले, अंतरंग में उसके भीतर क्या है ग्रहणकर माया, परमात्मा पर जिन्हें श्रद्धा न हो उन्हें छाँटकर, उन्हें दैवज्ञान से दूर कर देती है। इस विषय में वेमन योगी ने कहा " सब लोग जानते है विवाह

होने से पति पत्नी बनते हैं। सब जानते हैं पति पत्नी से बच्चे पैदा होते हैं। यह पूरी प्रक्रिया को ज्ञानी, अज्ञानी सब जानने के बावजुद सबलोग मानते है कि यह विषय दैविक विधि से संबंधित है, वह दैविक विषय ही प्रपंच में इस प्रकार से प्रतिबिम्बित है, प्रपंच में प्रत्यक्ष पति, पत्नी को आधार बनाकर परोक्ष में दैव विधान को समझ सकेंगें ऐसा परमात्मा ने इस प्रकार रखा। दैविक विधि के पति, पत्नी के विधान के बारें में विवरण कर देखते हैं।

भगवद् गीता गुणत्रय विभाग योग अध्याय में सर्वप्रथम परमात्मा को पति, प्रकृति को पत्नी कहा गया। श्री कृष्ण के बताये भगवद् गीता के अनुसार पूरे जगत के लिए प्रकृति, पुरुष पति, पत्नी के रुप में रहकर हर प्राणी के लिए वे ही माता, पिता हैं। प्रपंच में मानवजति के अलावा सारे कीट, कीटाणु, पशु, पक्षी, वृक्ष, और लताएँ सभी के लिए माता प्रकृति, पिता परमात्मा हैं सूचित किया गया। पूरे जगत के लिए माता, पिता बनकर, पति, पत्नी की तरह परमात्मा, प्रकृति प्रपंच में विभिन्न बर्ताव कर रहे हैं। पति परमात्मा की पत्नी प्रकृति आज्ञाकारी होने के बावजुद, परमात्मा के आदेशानुसार जगत के प्रति परमात्मा मार्ग अर्थात् दैवमार्ग के लिए प्रकृति अर्थात् माया बहुत ही विरोधी बनकर है। जो दैवमार्ग का अनुसरण करना चाह रहे होते हैं उनके प्रयत्न को भंगकर वापस लौटा देती है। यह पूरा परमात्मा की जानकारी में होता है। परमात्मा को पाने के प्रयत्न में माया प्रभाव को पार न कर पाने से सब वापस लौट जाते हैं। इसके बावजुद भी कई लाखों लोगों में एक माया का विरोधकर सारे कष्टों को सहकर परमात्मा को पाने का प्रयत्न कर रहे हैं। वैसे लोगों को परमात्मा, उनका मार्ग सुगम बनाकर माया की रुकावटें हटाकर, अपने में विलीन कर लेते हैं। ताकतवर माया के सारे परिस्थियों को अनुभव करते हुए, हठ बिना छोड़े परमात्मा के लिए प्रयत्न करने से परमात्मा मान जाते है।

परमात्मा मान जाने पर माया उस पर रुकावटें नहीं डालती है और उस व्यक्ति के योग का क्षेम परमात्मा ही परीक्षा लेते है। और वह व्यक्ति परमात्मा में लीन हो जाता है।

प्रपंच में माया के रचे अनेक कष्टों का अतिक्रमणकर जो परमात्मा मार्ग को न छोड़े, उसे परमात्मा अपना स्वीकार कर लेते है। और तुरन्त प्रकृतिरुपी माया भी मानकर उसके राह में रोड़ें नहीं अटकाती है। इसलिए एक दोहे के भाव में पति माने तो पत्नी मान जाती है कहा। इस प्रकार से परमात्मा, प्रकृति दोनों एक होते हैं तो उन्हे मोक्ष की प्राप्ति होती है। इसलिए कहा गया पति, पत्नी एक ही मार्ग में चलना न्याय होता है। पति, पत्नी अलग-अलग चलना अन्याय होता है। प्रकृति, परमात्मा भक्त के प्रति न्यायमार्ग में चलने से भक्त को मोक्ष की प्राप्ति होती है। और भक्त जन्मरहित हो जाता है।

प्रपंच में एक भक्त के प्रति पति-पत्नी अर्थात् परमात्मा और प्रकृति सबसे पहले अन्याय बर्ताव करते हैं, वेमन योगी ने दोहे के भाव में सूचित किया। पति मानने से ही पत्नी मानती है और न्याय से बर्ताव करते हैं। वे दोनों एक होकर न्याय बर्ताव करने पर ही भक्त को मोक्ष मिलता है। माया के रुकावटें सहनशक्ति से बाहर हो जाय और कहे कि मैं इतनी भक्ति से हूँ, मुझे ही कष्ट क्यों पहुँच रहा है, क्या परमात्मा के पास न्याय नहीं है सोचनेवाला परमात्मा मार्ग से भ्रष्ट हो जाता है। परमात्मा के बारें में कुछ न सोचते हुए सभी प्रकार से सहन करनेवाला, पहले परमात्मा से सम्मति पाकर, प्रकृति और परमात्मा न्याय बर्ताव करते हैं उन्हे मोक्ष प्राप्त होता है।

पति, पत्नी का विधान प्रपंच में प्रतिबिम्बित है पहले भी हम चर्चा कर चुके हैं। पति, पत्नी विरुद्ध व्यवहार करना, पति से अपनी बात मनवाना अन्याय विधान, इस धरती पर है। वैसे ही पति के अनुकूल चलना, पति जो

कहता उसे मानना न्यायमार्ग भी इस धरती पर है। आपके अनुभव में न्याय - अन्याय, और पति, पत्नी के बारें में पूरी जानकारी हो जाय तो कोई भी सम्पूर्ण ज्ञानी बन जायेगा। परमात्मा मार्ग में चलनेवालों पर राह में रुकावटें आती है, परमात्मा के पास न्याय है? कोई भी सहन खोकर बातें नहीं करेगा। कितनें ही कष्ट क्यों न आयें यह माता अर्थात् माया का काम है सोचकर जागरुक हो जाते हैं।

वेमन योगी के कहे अनुसार, तथा भगवद् गीता में विज्ञानयोग अध्याय में 14 वाँ श्लोक में

दैवी ह्येषा गुणमयी मम माया दुरत्यया ।
मामेव ये प्रपद्यन्ते मायामेतां तरन्ति ते ।।

भावार्थ :- मुझ ईश्वर की निज शक्ति त्रिगुणमयी माया दुस्तर है अर्थात् जिससे पार होना बड़ा कठिन है, जो कोई भी मेरी आराधना करता हो वे मेरी माया से सुलभता से पार हो जाते हैं।

देखा न ! भगवद् गीता में परमात्मा का वाक्य ! परमात्मा ने ही मेरी माया दुस्तर है, इससे पार कोई नहीं जा सकता है कहा। ऐसे में माया कितनी बलवान है कहने की आवश्यकता न होगी। मैं ज्ञानी, योगी, स्वामी, विश्वासी हूँ ऐसा कोई भी सोचने मात्र से ही माया उन्हे बिना परीक्षा लिए छोड़ेगी नहीं। माता के शोध में वह परमात्मा का पसन्द व्यक्ति हो तो उसे परमात्मा मार्ग में रुकानटें न डालेगी। अगर ऊपर से ज्ञानी नजर आये, भीतर से परमात्मा पर पूर्णत; विश्वास न कर रहा हो तो उन्हे माया नहीं छोड़ती है, और उसी मार्ग में सबकी जानकारी में भ्रष्ट कर देती है। इसी विषय में "तीन नालों को पार करना कठिन है" पोतुलूरि वीरब्रम्हम जी ने भी कहा था। तीन नालें अर्थात् तीन गुण । सात्विक, राजस, तामस गुण भागों को तीन नालें बताया। तीन गुणों को मिलाकर माया बताया जा

www.thraithashakam.org

रहा है। इसके अनुसार हमारे शरीर में माया सिर के अन्दर में विराजमान है।, उससे अनजान कुछ भी नहीं है, जो भी होता है गुणों की वजह से ही होने की वजह से माया का अतिक्रमण कर कोई नहीं जा सकता कह सकते हैं। इतनी ताकतवर माया पर कौन विजय पा सकता है, जो कोई भी परमात्मा की अराधना कर उनके पसन्दीदा होंगें, वो ही गुणों का सम्मेलन माया को पार कर पायेगा। इस विषय में गीता में "ये मामेव प्रपद्यन्ते" जो कोई भी मेरी ही आराधना करता हो "मायामेतां तरन्ति ते" वो माया को पार कर लेगा, भगवान ने कहा।

परमात्मा की आराधना करना अर्थात् उनकी पूरी महानता की जानकारी रहनी चाहिए। उनकी पूरी महानता जाननी हो तो उनके धर्मों की शास्त्रबद्धता से जानकारी रहनी चाहिए। उनके सारे धर्मों को जानना हो तो उनके समस्त समाचार(समस्तज्ञान) की जानकारी रहनी चाहिए। उनके समस्त ज्ञान को जानना हो तो परमात्मा द्वारा बताया गया मूल ग्रंथों में पूरे ज्ञान को जानना होगा। पूरी जानकारी रहने पर ही परमात्मा के विषय से संबंधित कोई भी प्रश्न का समाधान रहेगा और वह व्यक्ति परमात्मा के प्रति पूर्ण शास्त्रबद्ध विश्वासी हो पायेगा। इसके विपरीत किसी एक प्रश्न का भी शास्त्रबद्ध जवाब न हो तो, वह प्रश्न, प्रश्न ही रह जायेगा। प्रश्न बिना उत्तर की वजह से परमात्मा मार्ग में संशय उत्पन्न होने की संभावना बनी रहेगी। परमात्मा मार्ग में एक भी प्रश्न बच जाय उससे माया शोध कर, शंकाएँ उत्पन्न होकर, उस शंका को रुकावट में बदलकर, परमात्मा मार्ग से अलग कर देती है। मनुष्य सबसे ज्यादा मैं ही सही मार्ग में हूँ सोचना, मेरा मत(धर्म) ही सही है मानकर चलना, हमारे मत(धर्म) के परमात्मा ही असली परमात्मा है मान लेने पर भी कोई परवाह नहीं है। परन्तु परमात्मा संबंधित समस्त ज्ञान उन्हें मालूम है या नहीं जाँचकर देख लेना चाहिए। परमात्मा संबंधित किसी भी प्रश्न का उनके पास शास्त्रबद्ध समाधान है या नहीं जाँच लेनी चाहिए। परमात्मा संबंधित

समस्त ज्ञान की जानकारी होने पर ही, सभी प्रश्नों का शास्त्रबद्ध जवाब मिलेगा। जिसे समस्त ज्ञान की जानकारी है माया उन्हे कुछ नहीं करेगी। क्योंकि माया का पति परमात्मा उससे सहमत है।

अब कोई भी मुझसे "आपकी दृष्टि में **समस्त ज्ञान** क्या है" पुछ सकते हैं। इसका जवाब इस प्रकार है ! जहाँ तक मुझे अबतक जानकारी है परम भगवद् गीता, पवित्र क़ुरआन, पवित्र बाइबल ग्रंथों में बताया गया तथा इसके अलावा, और एक बार बताया गया पूर्णज्ञान को ही, समस्त ज्ञान कह सकते हैं। इसका मतलब यह नहीं कि केवल भगवद् गीता को पढ़कर मुझे समस्त ज्ञान की जानकारी हो गयी कहना पर्याप्त नहीं है। केवल बाइबल को पढ़कर समस्त ज्ञान की जानकारी हो गयी है कहना पर्याप्त नहीं है। **मूल ग्रंथों भगवद् गीता, बाइबल, क़ुरआन इन तीनों का अध्ययन करने के बाद और भी कुछ रह गया हो तो उसे भी पढ़ना समस्त ज्ञान होता है। अगर तीनों ग्रंथों में बताने के लिए और कुछ भी बाकि न रह गया हो तो वह समस्त ज्ञान होता है।** लेकिन कोई भी मत(धर्म) का व्यक्ति अपने मत को महान कहता है। और उसके ग्रंथ को ही समस्त ज्ञान का ग्रंथ कहता रहता है। उस बात में क्या सच? क्या झठ? कहने के लिए मौका मिल सकता है। बाइबल ग्रंथ में योहन्ना सुसमाचार 16 अध्याय 12, 13, 14 वचनों में "मुझे तुम से और भी बहुत सी बातें कहनी हैं, परन्तु अभी तुम उन्हें सह नहीं सकते। परन्तु जब वह अर्थात् सत्य का आत्मा आएगा, तो तुम्हें सब सत्य का मार्ग बताएगा, क्योंकि वह अपनी ओर से न कहेगा, परन्तु जो कुछ सुनेगा वही कहेगा, और आनेवाली बातें(ज्ञान की बातें) बताएगा। वह मेरी बातों में से लेकर तुम्हें बताएगा।" इस वचन के अनुसार मूल ग्रंथों में प्रवक्ताओं के बताए ज्ञान के अलावा और भी ज्ञान बाकि रह गया है कह सकते हैं। इतना ही नहीं बाइबल में योहन्ना सुसमाचार में 14 वाँ अध्याय 26 वाक्य में "सहायक(आदरणकर्ता) अर्थात् पवित्र आत्मा जिसे पिता मेरे नाम से भेजेगा, वह तुम्हें **सब बातें (सारे ज्ञान)**

सिखाएगा, और जो कुछ मैंने तुम से कहा है, वह सब तुम्हें स्मरण कराएगा।" लिखा गया। इसके अनुसार देखा जाय तो सहायक(आदरणकर्ता) के रुप में आने वाला व्यक्ति प्रवक्ता के बताए समस्त ज्ञान का बोध करवाना ही नहीं बल्कि, जो बातें बतायेंगें उसे विशद कर समझायेंगें भी।

कई और लोगों ने कृष्ण, ईसा प्रवक्ताओं के मृत्यु के बाद उसके बाद आये प्रवक्ता हजरत मोहम्मद जी क़ुरआन में समस्त ज्ञान को बताए होंगें न ! ऐसा अपने उद्देश्य को व्यक्त कर सकते हैं। यह समझनेवाली बात है ! अन्तिम प्रवक्ता मोहम्मद जी ही है इसे आनेवाला आदरणकर्ता ही कहेंगें। सहायक(आदरणकर्ता), और प्रवक्ता दोनों अलग-अलग हैं। प्रवक्ता के बारें में समस्त प्रपंच जानेगा। परन्तु आदरणकर्ता जब तक जीवित रहेंगें उन्हें कोई नहीं जान न पायेगा। इस विषय में बाइबल ग्रंथ में योहन्ना सुसमाचार 17 वाँ वाक्य में "सत्य का आत्मा, जिसे संसार ग्रहण नहीं कर सकता, क्योंकि वह न उसे देखता है और न उसे जानता है; तुम उसे जानते हो, क्योंकि वह तुम्हारे साथ रहता है, और वह तुम में होगा" दिया गया। इसके अनुसार सहायक(आदरणकर्ता) के रुप में आनेवाला प्रवक्ता नहीं है, जानकारी हो गयी। सहायक (आदरणकर्ता) के रुप में आनेवाला व्यक्ति प्रपंच में लोग जान नहीं पायेंगें, जानकारी हो गयी। प्रवक्ता की पहचान होती है, आदरणकर्ता का पहचान नहीं होती है। जब प्रभु जीवित थे प्रभु ने जिनसे ये सारी बातें उस दिन कहा था, वे ही मात्र आदरणकर्ता को पहचान सकेंगें। उन्हीं के मध्य वे रहेंगें। प्रभु अपने ग्यारह शिष्यों को ये बातें बतायी थी। इसलिए आदरणकर्ता(सहायक) के रुप में आने वाला दस, ग्यारह लोगों को छोड़कर और किसी को पहचान में न आयेंगें समझ सकते हैं। अत; आदरणकर्ता प्रवक्ता नहीं है कह सकते हैं। दुनिया द्वारा पहचान में न आना, वह व्यक्ति जो प्रवक्ता न थे उनके द्वारा प्रवक्ता का छोड़ा हुआ ज्ञान भी बताया जायेगा तथा प्रवक्ता के बताए ज्ञान को भी वे विशदकर बतायेंगें सूचित हो रहा है।

माया को पार कर परमात्मा में पहुँचना हो तो, सबसे पहले मूल ग्रंथों मत(धर्म) ग्रंथों का अध्ययन करना चाहिए। तीनों मत ग्रंथों में थोड़ा फर्क हो सकता है लेकिन ज्ञान एक ही है। एक ही परमात्मा के बारें में बताने के बावजुद, उन ग्रंथों में ज्ञान अनेक लोगों समझ में न आने की वजह से हमारा ज्ञान अलग है, हमारे परमात्मा अलग है कहने की स्थिीति में आ गए हैं। तीनों प्रवक्ताओं द्वारा बताया ज्ञान जब समझ में न आये, तो फिर वे माया पर कैसे विजय पायेंगें ? एक ग्रंथ को मात्र ही पढ़कर अन्य दो ग्रंथों को न पढें और उन्ही के ग्रंथ के ज्ञान को महान ज्ञान मान लेते हैं। उन्हीं के प्रवक्ता द्वारा बताए बातों के अलावा अन्य प्रवक्ता के बताए को न पहचानने वाला, आदरणकर्ता जो प्रवक्ता नहीं है बताए ज्ञान को क्या पहचान पायेगा ? उनके मजहब का ज्ञान ही महान है मानकर, अन्य मजहबों में क्या बताया अनसुना करनेवाला , उनके जानकारी का ज्ञान ही उत्तम है मानकर, एक सीमा में खुद को बाँध लेता है। वैसे में और भी बहुत कुछ ज्ञान की जानकारी कैसे मालूम होगी ? यीशु के अनुसार आदरणकर्ता आयेंगें और समस्त ज्ञान को सूचित करेंगें कहने पर भी, उस विषय में हिन्दू हो या मुस्लिमों को मालूम न हो पाया, और हमें जानने के लिए ज्ञान ही नहीं बचा है सोचकर खुद को सीमा में बाँध लिया। वैसे में उनके मजहब में नसमझ में आनेवाला या गलतफहमी को आदरणकर्ता बताने पर भी समझ नहीं पायेंगें। उनके ग्रंथ में बताए ज्ञान को ठीक से विवरण सूचित करने पर भी न समझनेवाला मनुष्य, और भी ज्ञान की जानकारी हेतु प्रयास ही नहीं करेगा। वैसे लोगों को स्वर्ग और परलोक में भेद ही नजर नहीं आयेगा। आज गुरुओं, बोधकों के रुप में खुद को बतानेवाले, अपने ज्ञान के अलावा अन्य प्रवक्ता के बताए ज्ञान से असहमत हैं। दूसरे मत से द्वेष करनेवाले उस मत के ज्ञान से ही अनजान हो, तो आदरणकर्ता द्वारा सूचित ज्ञान उनके लिए कोई मायने नहीं रखेगा। आदरणकर्ता समस्त ज्ञान सूचित करने के बावजुद, उन्हें कम से कम ज्ञानी

के रुप में भी नहीं समझेंगें। ऐसे में किसी भी मत के व्यक्ति के लिए समस्त ज्ञान जानने की संभावना ही न रहेगी। वैसे लोग सम्पूर्ण ज्ञानी नहीं बन सकते। और माया को पार कर परमात्मा के पास नहीं पहुँच पायेंगें। माया मत पर पसन्द करवाकर, मतों में ही उसे बाँध देती है। ज्ञान पथ में प्रयाण न करने देगी।

प्रस्तुतकाल में माया ने मनुष्यों पर एक और अस्त्र का प्रयोग किया। ईसाईयों, इस्लाम से बढकर कई हजारों, लाखों वर्षों से चली आ रही हिन्दूमत में परमात्मा के बताए ज्ञान को दबाने के लिए, मनुष्य उनके(माया) प्रभाव से मुक्त न हो सके, वही ज्ञान असली ज्ञान है मनुष्य को दिखलाते हुए, वेदों को मनुष्य अतिउत्तम परिगणना लें माया ने कर दिखाया। सृष्टि के आदि में ही परमात्मा ने सूर्य द्वारा धरती पर दैवज्ञान को प्रवेश करवाया, मध्य में आयें वेद। वेदों को परमात्मा के बताए ज्ञान से भी बढ़कर मनुष्यों को नजर आ सके माया ने किया। वेदों के जाल में फँसे सभी हिन्दू दैवज्ञान को भूलकर, वेदों को ही उत्तम ज्ञान का दर्जा दे रहे हैं। वेदों के कारण मनुष्य परमात्मा से दूर हो गया है। सृष्टि के आदि में परमात्मा अपने ज्ञान को बताया, लेकिन माया अपने वेदों को सच्चा ज्ञान के रुप में प्रचार कर, मनुष्य उसमें फँसकर रह जाए,किया। और तब परमात्मा ने अपने प्रवक्ताओं द्वारा अलग-अलग देशों में अपना ज्ञान कहलवाया। और प्रवक्तों के बताए ज्ञान हिन्दूओं में भगवद् गीता के रुप में, ईसाईयों में बाइबल के रुप में, मुस्लिमों में क़ुरआन के रुप में हैं। भगवद् गीता से पहले वेदों आने की वजह से हिन्दूओं ने वेदों को भगवद् गीता से बढकर माना,। भगवद् गीता में परमात्मा ने वेदों से मुझे जान न पाओगे विश्वरुप संदर्शन योग में 48, 53 श्लोकों में कहा, उनके(परमात्मा) के बातों को हिन्दू नहीं सुन रहे हैं। भगवद् गीता में "त्रैगुण्या विषयावेदा" सांख्यायोग में 45 वाँ श्लोक में कहा। इसका भावार्थ है **तीनों गुणों के विषय ही वेद हैं**। भगवद् गीता विज्ञान योग में 14 वाँ श्लोक "गुणमयी मम

माया" कहा। गुण ही माया है कहा। इससे हम समझ सकते हैं कि वेद ही माया है। वेदों के बारें में गीता में बताने के बावजुद, हिन्दूओं ने भगवद् गीता को छोड़कर, वेदों के बारें में बातें करते हैं, उसे ही असली ज्ञान मान बैठे हैं। इस प्रकार से गीता में परमात्मा ने चेतावनी देने के बावजुद, बाहर न आ सकनेवाले हिन्दूओं के रुप में, वेदों के रुप में माया अब अन्य मतों(धर्मों) में भी व्याप्त हो गयी है। ईसाईयों ने अपने प्रभु के बारें में वेदों में भी खूब अच्छे से वर्णन किया कह रहे हैं। प्रभु के रक्त की वजह से पाप परिहार्य होंगें श्लोक में, और दूसरे श्लोकों को बताते हुए वे वेदों से प्रभावित हो रहे हैं।

इतना ही नहीं बल्कि प्रस्तुतकाल में कई इस्लाम बोधकों ने भी वेदों को कंठस्थकर, वेदों में से संस्कृत श्लोकों को बताते हुए, उनके इस्लाम से संबंधित समाचार भी वेदों में बताया गया कह रहे हैं। विशेष रुप से ऋगवेद के बारें में अधिकतर बता रहे हैं। इन सब को देखने से मालूम पड़ता है कि वेदों से एक हिन्दू ही नहीं बल्कि ईसाई और इस्लाम के लोग भी प्रभावित हैं। तीनों गुणों के विषय ही वेद हैं, गुण ही मेरी माया है, परमात्मा ने गीता में कहने की वजह से वेद ही माया है, सिद्ध होता है। अब तीनों मतों के लोग प्रत्यक्ष वेदों का आश्रय लेकर, माया में फँस गए हैं। माया में फँसे लोगों को परमात्मा ने नपसन्द किया माया पहचानकर, परमात्मा मार्ग से दूर कर सकती है। माया अपने ज्ञान को उत्तन जताकर, उसमें भी परमात्मा के विषयों को कहीं-कहीं परमात्मा के बारें में बताते हुए नजर में लाती है, और परमात्मा से दूर कर देती है। ऐसे में मनुष्य परमात्मा का समस्त ज्ञान को नहीं जान सकेगा। इसलिए मनुष्य को माया से बाहर निकलने के लिए तीनों मतों(धर्मों) के ग्रंथों का अध्ययन करना चाहिए। तीनों प्रवक्ताओं द्वारा बताए गए ज्ञान को समझना चाहिए। बाद में अनजान व्यक्ति(आदरणकर्ता) द्वारा बताए समस्त ज्ञान को असूय किए

बिना जानना चाहिए। और तब ही मनुष्य को ज्ञान समझ में आ सकेगा। और समाधि में न पहुँचकर परमात्मा में लीन हो जायेगा।

आपका

इन्दू धर्मप्रदाता

संचलनात्मक रचयिता, त्रैत सिद्धान्त आदिकर्ता

श्री . श्री . श्री आचार्य प्रभोदानन्द योगिश्वर

www.thraithashakam.org